।। ओ३म्।।

पाक्षिक

परोपकारी

• वर्ष ५९ • अंक ८ • मूल्य ₹१५ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र • अप्रैल (द्वितीय) २०१७

हैदराबाद सत्याग्रह के सूत्रधार एवं आन्दोलन के प्रथम सर्वाधिकारी

पूज्यपाद महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज

का हैदराबाद विजय के उपरान्त लिया गया चित्र

(स्वामी जी की सादगी इस चित्र में विशेषतया द्रष्टव्य)

परिचय पृष्ठ संख्या ३६ पर

सामाजिक समरसता कार्यक्रम के सहयोगियों को सम्मानित करते परोपकारिणी सभा के मंत्री श्री ओममुनि 'वानप्रस्थी'

श्री दुर्गादास जी (राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के राजस्थान प्रान्त क्षेत्रीय प्रचारक)

श्री महावीर जी (सेवाभारती दौसा विभाग प्रमुख)

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुख पत्र

वर्ष : ५९ अंक : ०८

दयानन्दाब्द: १९३

विक्रम संवत्: बैशाख कृष्ण २०७४

कलि संवत्: ५११८

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११८

सम्पादक

डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु.,
त्रिवार्षिक-५८० रु.,
आजीवन-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।
एक प्रति - १५/- रु.

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डालर
द्विवार्षिक-९५ पा./१५२ डा.,
त्रिवार्षिक-१४० पा./२२५ डा.,
आजीवन-(=१५वर्ष)-५००पा./८०० डा.
एक प्रति - ३ पाउण्ड
एक प्रति - ४ डालर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२११२७०

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

अप्रैल द्वितीय २०१७

अनुक्रम

०१. महर्षि दयानन्द का अध्यात्मवाद	सम्पादकीय	०४
०२. यास्क और वेदार्थ पद्धतियाँ	डॉ. धर्मवीर	०६
०३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	११
०४. सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार की भव्य योजना		१६
०५. जिज्ञासा समाधान-१३१	आचार्य सोमदेव	१७
०६. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		१९
०७. विलक्षण महर्षि-दयानन्द जी	महात्मा चैतन्यमुनि	२०
०८. लोकोत्तर धर्मवीर	तपेन्द्र वेदालंकार	२३
०९. संस्था-समाचार	लेखराम आर्य	२७
१०. प्रकाशस्वरूप अग्नि सबका रक्षक...	डॉ. कृष्णपाल सिंह	२९
११. शराब और मूर्तिपूजा	पं. आर्य प्रहलाद गिरि	३२
१२. तत्त्ववेत्ता महात्मा नारायण स्वामीजी!	डॉ. वेदप्रकाश	३६
१३. आह! ऊहावान् ऋषि-भक्त.....	राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	३८
१४. परिचय- श्री मथुराप्रसाद नवाल		३९
१५. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com →

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

महर्षि दयानन्द का अध्यात्मवाद

विश्व के सभी चिन्तकों ने परमसत्य के विषय में विचार किया है और इसे अपनी दृष्टि से परिभाषित भी किया है। पाश्चात्य, प्राचीन एवं नवीन चिन्तकों में सुकरात, प्लेटो और अरस्तू, देकार्ते, लाइबनिज, स्पिनोजा, लॉक, बर्कले, ह्यूम, रसेल, एमेन्युअल, काण्ट इत्यादि ने अपनी-अपनी दृष्टि से परमसत् की व्याख्या की है। पौर्वात्य चिन्तकों में हमें प्रथमत: वेदों में परमसत्ता अर्थात् परमात्मा का विवेचन मिलता है और फिर सम्पूर्ण भारतीय परम्परा परमसत् (ब्रह्म) को केन्द्र मानकर जीवन के सभी व्यवहारों की व्याख्या करती है। भारतीय चिन्तना में आधुनिक काल को देखा जाए तो महर्षि दयानन्द सरस्वती की परमसत् की अवधारणा का स्रोत वेद है जिसके आधार पर उन्होंने ब्रह्म को परिभाषित किया है।

महर्षि दयानन्द के अध्यात्मवाद की धुरी ही वह परमसत्ता है जिसके संदर्भ में ही जीव और जगत् की व्याख्या की जा सकती है। उनका दृष्टिकोण आधुनिक पाश्चात्य चिन्तकों और आधुनिक भारतीय विचारकों में निरपेक्ष (सत्) की अवधारणा से इस रूप में विलग है कि निरपेक्ष किसके लिए है और क्यों है? सत्य की यही जिज्ञासा ज्ञान की विभिन्न धाराओं में देखी जा सकती है। इसीलिए पारमार्थिक और व्यावहारिक दोनों क्षेत्रों में बाँटकर वे परमसत् की अवधारणा की व्याख्या करते हैं, चाहे आचार्य शंकर हों या अज्ञेयवादी काण्ट।

महर्षि दयानन्द ने वेदों का भाष्य करने से पूर्व ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, सत्यार्थ-प्रकाश और आर्याभिविनय में मुख्य रूप से परम सत् का विस्तार से विवेचन किया है। महर्षि दयानन्द परमात्मा से पिता और पुत्र का सम्बन्ध मानते हुए अलौकिक दृष्टि से भावविह्वल होकर जो व्याख्या करते हैं वह निश्चय ही आधुनिक चिन्तकों के दर्शन में दूर-दूर तक व्याख्यायित नहीं हो पाती।

२०वीं शताब्दी में परमतत्व से सम्बन्धित समन्वयवादी विचारधारा भारत में विकसित हुई, ऐसा डॉ.अल्बर्ट स्वाइट्जर स्वीकार करते हैं। हम देखते हैं कि आचार्य शंकर की परम्परा में व्यवहारवाद और परमार्थवाद के समन्वय की विभिन्न व्याख्याएँ सुरेश्वराचार्य जैसे उनके अनुयायी दार्शनिकों ने की हैं। लेकिन, डॉ. सुरेन्द्रनाथ दासगुप्ता, डॉ. पी.टी. राजू, डॉ. उमेश मिश्र, के.सी. भट्टाचार्य इत्यादि दार्शनिकों ने भारतीय चिन्तना में इसी क्रम में प्रत्ययवाद की अवधारणा को जन्म दिया। इन संदर्भों में देखा जाये तो महर्षि दयानन्द ने १९वीं शताब्दी में परमसत्ता का अस्तित्व, उसका महत्व और जीव तथा जगत के सम्बन्धों की विशिष्ट स्थिति को अपने ग्रन्थों में विस्तार से विवेचित किया है और इस दृष्टि से समकालीन भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों ही क्षेत्रों में दार्शनिकों ने इस महत्वपूर्ण परमसत्ता के विषय को जिस क्लिष्ट शब्दावली से या तो व्याख्यायित किया है और या फिर मार्क्सवादी विचारधारा के आधार पर उसके अस्तित्व का खण्डन किया है। लेकिन यह विचारधारा जिसमें परम सत्ता के अस्तित्व को अस्वीकार कर मानव-जीवन की विभिन्न प्रवृत्तियों को चाहे वह सामाजिक आर्थिक या राजनैतिक हो- व्याख्या करने में समर्थ नहीं हो पायीं। इसलिए उन विचारधाराओं की अट्टालिकाएँ ढह गईं।

महर्षि दयानन्द ने आर्याभिविनय में ईश्वर और जीव के सम्बन्धों में जीवात्मा के उन स्वरों को अद्वितीय विवेचना एवं शब्दावली के द्वारा स्पष्ट किया है-

हे सच्चिदानन्दस्वरूप! हे नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभाव! हे अद्वितीयानुपम जगदादिकारण! हे अज, निराकार, सर्वशक्तिमन्, न्यायकारिन्! हे जगदीश, सर्वजगदुत्पादकाधार! हे सनातन, सर्वमङ्गलमय, सर्वस्वामिन्! हे करुणाकरास्मत्पित:, परमसहायक! हे सर्वानन्दप्रद सकलदु:खविनाशक! हे अविद्यान्धकारनिर्मूलक, विद्यार्कप्रकाशक! हे परमैश्वर्यदायक, साम्राज्यप्रसारक! हे अधमोद्धारक, पतितपावन, मान्यप्रद! हे विश्वविनोदक, विनयविधिप्रद! हे विश्वासविलासक! हे निरञ्जन, नायक, शर्मद, नरेश, निर्विकार! हे सर्वान्तर्यामिन्, सदुपदेशक, मोक्षप्रद! हे सत्यगुणाकर, निर्मल, निरीह, निरामय, निरुपद्रव, दीनदयाकर, परमसुखदायक! हे दारिद्र्यविनाशक, निर्वैरविधायक, सुनीतिवर्धक! हे प्रीतिसाधक, राज्यविधायक, शत्रुविनाशक! हे सर्वबलदायक, निर्बलपालक! धर्मसुप्रापक! हे अर्थसुसाधक, सुकामवर्द्धक, ज्ञानप्रद! हे सन्ततिपालक, धर्मसुशिक्षक, रोगविनाशक! हे पुरुषार्थप्रापक, दुर्गुणनाशक,

सिद्धिप्रद! हे सज्जनसुखद, दुष्टसुताडन, गर्वकुक्रोधकुलोभविदारक! हे परमेश, परेश, परमात्मन्, परब्रह्मन्! हे जगदानन्दक, परमेश्वर, व्यापक, सूक्ष्माच्छेद्य! हे अजरामृताभयनिर्बन्धानादे! हे अप्रतिमप्रभाव, निर्गुणातुल, विश्वाद्य, विश्ववन्द्य, विद्वद्विलासक इत्याद्यनन्तविशेषणवाच्य! हे मङ्गलप्रदेश्वर! आप सर्वथा सबके निश्चित मित्र हो, हमको सत्यसुखदायक सर्वदा हो। हे सर्वोत्कृष्ट, स्वीकरणीय, वरेश्वर! आप वरुण, अर्थात् सबसे परमोत्तम हो, सो आप हमको परमसुखदायक हो। हे पक्षपातरहित, धर्मन्यायकारिन्! आप अर्यमा (यमराज) हो, हमारे लिए न्याययुक्त सुख देने वाले आप ही हो। हे परमैश्वर्यवन्, इन्द्रेश्वर! आप हमको परमैश्वर्ययुक्त शीघ्र स्थिर सुख दीजिए। हे महाविद्य वाचोऽधिपते! बृहस्पते, परमात्मन्! हम लोगों को (बृहत्) सबसे बड़े सुख को देने वाले आप ही हो। हे सर्वव्यापक, अनन्त-पराक्रमेश्वर, विष्णो! हमको सुखों का देने वाला आपके बिना कोई नहीं है। सर्वथा हम लोगों को आपका ही आश्रय है, अन्य किसी का नहीं, क्योंकि सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयामय सबसे बड़े पिता को छोड़ के नीच का आश्रय हम लोग कभी न करेंगे। आपका तो स्वभाव ही है कि अङ्गीकृत को कभी नहीं छोड़ते सो आप सदैव हमको सुख देंगे, यह हम लोगों को दृढ़ निश्चय है।

इस प्रकार महर्षि की परमसत् की व्याख्या न तो एकांगी है और न अपूर्ण, उसमें स्पष्टता व्याप्त है, चूँकि जीव-जगत् के संपूर्ण व्यवहारों का आधार परमेश्वर-ब्रह्म ही है, अत: महर्षि की उक्त प्रार्थनापरक एवं विशेषण-प्रधान व्याख्या में जीव-जगत् व ब्रह्म के सम्बन्धों एवं सद्व्यवहारों की अद्भुत अन्विति दृष्टिगोचर होती है। कहना न होगा कि आर्ष-अनार्ष दृष्टि में सम्यक विवेक ही इसका कारण है।

महर्षि दयानन्द ने आधुनिक भारतीय चिन्तकों, यथा- रामकृष्ण परमहंस, श्री अरविन्द, डॉ. राधाकृष्णन् इत्यादि से सर्वथा भिन्न, केवल वेद के आधार पर परमसत्ता की विवेचना एवं व्याख्या कर उसे काण्ट की भाँति अज्ञेय नहीं माना और न ही श्री अरविन्द की भाँति आरोहण-अवरोहण की सत्ता को।

महर्षि दयानन्द ने वर्तमान समय की दार्शनिक समस्याओं का अपने वेद-आधारित अध्यात्मवाद में समाधान प्रस्तुत किया है। इसीलिए नैतिकता, धर्म, भक्ति, मोक्ष इत्यादि प्रयत्नों की निर्दोष विवेचना ही उनकी विशेषता है। प्रसंगोपत्त उन्होंने ईश्वर के 100 नामों का उदाहरणरूपेण विवेचन भी किया है यद्यपि ईश्वर के अनन्त नाम हैं।

आज के वैज्ञानिक युवा में तर्क और विवेक के आधार पर जिन चिन्तनों को एकांगी माना गया है। उन्हीं समस्याओं का समग्र समाधान सत्यार्थ-प्रकाश के प्रथम समुल्लास और ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में ब्रह्म, उपासना इत्यादि के प्रकरण में विवेकसम्मत दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। शैलिंग, हेगल, शौपनहार, बर्ट्रेण्ड रसेल, विलियम जेम्स, जॉन डी.वी., राइस इत्यादि परमसत् के केवल जीवन और जड़-जगत् के सम्बन्धों की विवेचना कभी परमसत्ता को चेतन मानना और कभी उसे नैतिकता की आवश्यक शर्त बताकर, कभी उसे पदार्थ का व्यक्त रूप मानना, किसी भी प्रकार मानव बुद्धि की मांग को सन्तुष्ट कर पाने में असमर्थ रहा।

दार्शनिक साहित्यकार निर्मल वर्मा ने ठीक ही कहा है कि १९वीं शताब्दी में धर्म एवं समाज के छद्म आधुनिकीकरण और ईसाई धर्म के प्रति एक बचकाने सम्मोहन से ग्रस्त काल में केवल दयानन्द सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, बंकिमचंद्र चटर्जी और विवेकानन्द तथा हिन्दी भाषा और भारतेन्दु काल के कुछ साहित्यकार ही बचे हुए थे। ऐसे चिन्तनीय काल में महर्षि दयानन्द का अध्यात्म ही समग्र दृष्टि से वैज्ञानिक तर्कवाद के समक्ष वेदों के आधार पर परमात्मा विषयक विचारों की स्थापना कर सका।

महर्षि दयानन्द ने परम सत्ता के साथ मानवीय सम्बन्धों को आर्याभिविनय के उक्त उद्धरण में स्पष्ट किया है और उन्होंने माना है कि मानव को परमसत्ता के साक्षात्कार के लिए बुद्धिमत्ता, तार्किकता, सृजनात्मकता और प्रबुद्धता को अंगीकृत करना होगा। महर्षि दयानन्द ने ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना के यथार्थस्वरूप को विभिन्न वेदमंत्रों के भाष्य में प्रतिपादित किया है।

ऐसी दशा में आज आवश्यकता है कि हम महर्षि दयानन्द के अध्यात्मवाद को विश्व के समक्ष तुलनात्मक अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करें ताकि विश्वविद्यालयों में महर्षि दयानन्द के अध्यात्मवाद को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाकर विद्यार्थियों को उसका परिचय कराया जा सके।

– दिनेश

यास्क और वेदार्थ पद्धतियाँ

-आचार्य डॉ. धर्मवीर

यास्कचार्य की वेदार्थ की योग्यता को स्वयं निरुक्त प्रमाणित करता है। जहाँ निरुक्त वेदार्थ की कुञ्जी है, वहीं यास्क द्वारा निरुक्त की रचना निरुक्त की प्रामाणिकता की कुञ्जी है। यास्क का विशाल ज्ञान, विस्तृत अध्ययन, सूक्ष्म दृष्टि तथा निर्णायक क्षमता के दिग्दर्शन निरुक्त की पंक्तियों में होते हैं। निरुक्त का प्रारम्भ करते हुए यास्क कहते हैं-

समाम्नाय: समाम्नात:। स व्याख्यातव्य:।

- नि. १/१

अर्थात् जो कहना था कह दिया, जो कहा है उसकी व्याख्या करते हैं। निघण्टु वैदिक शब्दों का संग्रह है। वेद के विस्तृत क्षेत्र से व्याख्यान के योग्य शब्दों का संग्रह कोई पारदृष्टा आचार्य ही कर सकता है। वेदार्थ जानने में जो मानदण्ड यास्क ने स्थापित किये हैं, उनमें प्रथम है नामों आख्याओं को न स्वीकार करना। इसके लिए उन सभी प्रश्नों को उपस्थित कर उनका योग्यतापूर्वक समाधान किया है।

तत्र नामान्याख्यातजानीति शाकटायनो नैरुक्त समयश्च।

यहाँ पर वैय्याकरण एवं नैरुक्त सम्प्रदाय की चर्चा हुई। दोनों पक्षों में उभयविध मान्यता के लोग हैं।

आचार्य यास्क की दृष्टि से निरुक्त वेदार्थ का मूल होने पर भी व्याकरण की वेदार्थ में स्वीकार्यता सर्वविदित है-

अथापीदमन्तरेण मन्त्रेष्वर्थप्रत्ययो विद्यते।
अर्थमप्रतियतो नात्यन्तं स्वरसंस्कारोद्देश:।
तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कार्त्स्न्यं
स्वार्थसाधकञ्च।

- निरुक्त १।५

इस प्रकार व्याकरण सम्प्रदाय की वेदार्थ में उपयोगिता तथा-

यदि मन्त्रार्थ प्रत्ययायानर्थकं भवतीति कौत्स:।

अनर्थका हि मंत्रा: तदेतेनोपेक्षितव्यम्।

कह कर मन्त्रों को अनर्थक मानने वाले सम्प्रदायी कौत्स के माध्यम से निराकृत कर दिया है।

अथापीदमन्तरेण पदविभागो न विद्यते।

- निरुक्त १।१७

अथापि याज्ञे दैवतेन बहव: प्रदेशा भवन्ति।
तदेतेनोपेक्षितव्यम्।

कहकर मन्त्रों का यज्ञीय सम्बन्ध बताया है।

निरुक्त ज्ञान की कसौटी है, इसको यास्क इस प्रकार दर्शाते हैं-

अथापि ज्ञान प्रशंसा भवत्यज्ञाननिन्दा च। १/६

यास्क वेद के पठन-पाठन की प्राचीन परम्परा को बताते हुए कहते हैं-

साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवु:।
तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान्त्सम्प्रादु:।
उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्मंग्रहणायेमं ग्रन्थं
समाम्नासिषुर्वेदं च बेदाङ्गानि च। बिल्मं भिल्मं
भासनमिति वा।

- निरुक्त १।२०

यहाँ पर **वेदं च वेदाङ्गानि च** कहकर अगले साहित्य को भी वेद के तुल्य महत्त्व दे दिया है।

यास्क का केवल शास्त्रीय ज्ञान ही नहीं, बल्कि उनका भाषा विषयक विस्तृत अध्ययन दूसरे अध्याय के प्रारम्भ में निर्वचन की अनिवार्यता प्रकरण में देखने को मिलता है। यास्क के मन्त्रार्थ निर्णय का आधार निर्वचन है और निर्वचन का उद्देश्य अर्थ का औचित्य प्रतिपादित करना है। बहुत सारे विद्वानों का मानना है कि यास्क को निश्चित अर्थ का पता नहीं अत: 'वा' कहकर एक शब्द के छ: अर्थ बताते हैं परन्तु वास्तविकता यह है कि मन्त्रों में मिलने वाले एक शब्द के छ: अर्थ देकर उनका औचित्य सिद्ध करना आचार्य का प्रयोजन है। यथा- गौ।

आचार्य निर्वचन के पीछे अर्थ को नहीं चलाते वे अर्थ के पीछे निर्वचन को ले जाते हैं अत: कहते हैं-

अथानन्वितेऽर्थेऽप्रादेशिके विकारेऽर्थनित्य: परीक्षेत केनचिद् वृत्तिसामान्येन। अविद्यमाने सामान्येप्यक्षरवर्णसामान्यान्निर्ब्रूयात्। न त्वेव निर्ब्रूयात्।

न संस्कारमाद्रियेत विषयवत्यो हि वृत्तयो भवन्ति। यथार्थं विभक्तीः सन्नमयेत्। – निरुक्त २।१

निरुक्त का मुख्य उद्देश्य मन्त्र का देवता-ज्ञान है। अतः तीन काण्डों में तीसरा काण्ड आधा निरुक्त है। इस देवता ज्ञान की परीक्षा बतलाते हुए निरुक्तकार ने अनेक सम्प्रदायों का उल्लेख किया है। आदिष्ट देवता की परीक्षा के बाद अनादिष्ट देवता की परीक्षा में विभिन्न सम्प्रदाय मन्त्रार्थ में किस देवता को स्वीकारते हैं इसका उल्लेख किया है-

अन्यत्र यज्ञात् प्राजापत्या इति याज्ञिकाः। आख्यान समयः

देवता निर्णय में औरों से अपनी मान्यता की भिन्नता का कारण देते हुए यास्क कहते हैं- अन्य लोग देवता के भिन्न कार्यों को भिन्न देवता मान लेते हैं, मैं ऐसा नहीं मानता-

तान्यप्येके समामनन्ति। भूयांसि तु समाम्नानात्। यत्तु संविज्ञानभूतं स्यात् प्राधान्यस्तुति तत्समामने।

– निरुक्त ७/३

यास्काचार्य वेदार्थ प्रक्रिया में '**चत्वारि वाक् परिमिता पदानि**' मन्त्र की व्याख्या करते हुए वैय्याकरण, याज्ञिक, नैरुक्त आदि सम्प्रदायों का उल्लेख करते हैं।

ऋचोक्षरे..... मन्त्र की चर्चा में,

इति ब्राह्मणम् इति शाकपूणिः **आत्मप्रवादाः**

कहकर सबका पक्ष उपस्थित करते हैं-

और अक्षर का अर्थ ओम्, अक्षर का अर्थ आदित्य तथा शरीर के अन्दर जो अविनाशी धर्म है उसे भी अक्षर कहा गया है।

ऋचोक्षरे इस मन्त्र की व्याख्या करते हुए निरुक्त में जो महत्त्वपूर्ण बात कही गई है-

अयं मन्त्रार्थ चिन्ताभ्यूहोऽभ्यूढः। अपिश्रुतितोऽपितर्कतः। न तु पृथक्त्वेन मन्त्रा निर्वक्तव्याः। प्रकरणश एव तु निर्वक्तव्याः। नह्येषु प्रत्यक्षमस्त्यनृषेरतपसो वा। पारोवर्य्यवित्सु तु खलु वेदितृषु भूयो विद्यः प्रशस्योभवतीत्युक्तं पुरस्तात्।

मनुष्या वा ऋषिषूत्क्रामत्सु **देवानब्रुवन्। को न ऋषिर्भविष्यतीति। तेभ्य एतं तर्कमृषिं प्रायच्छन् मन्त्रार्थ चिन्ताभ्यूहमभ्यूढम्।**

वेदार्थ करने के लिये जिन महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखने की आवश्यकता है उन सबका संक्षेप से निदर्शन यहां होता है। मन्त्र का ज्ञान करने की परम्परा और तर्क दोनों का उपयोग करना उचित है। बिना प्रसंग के मन्त्रों का अर्थ नहीं करना चाहिए अपितु प्रसंग को ध्यान में रखकर ही अर्थ करना चाहिए। जो अधिक जानने वाला है, उसका निर्णय अधिक ठीक हो सकता है। जहाँ कोई बताने वाला नहीं है, वहाँ बुद्धि से, ऊहा से, तर्क से वेदार्थ को समझने का यत्न करना चाहिए।

निरुक्त में यास्क ने अपने व्याख्यान के औचित्य को सिद्ध करने के लिए अपने पक्ष के समर्थन में अथवा दूसरे पक्ष के खण्डन में जिन आचार्यों का उल्लेख किया, उस उल्लेख द्वारा उन आचार्यों का नाम तथा उनके विचारों का पता चलता है। इनमें १-नैरुक्त, २- वैय्याकरण, ३- आर्ष, ४- याज्ञिक, ५- आत्मप्रवाद, ६- परिव्राजक, ७- पूर्वयाज्ञिक, ८- आख्यान समय, ९- ऐतिहासिक, १०- नैदान इस प्रकार इन सम्प्रदायों की चर्चा न्यूनाधिक यास्क ने अपने ग्रन्थ में की है।

निरुक्तकार ने अन्य सम्प्रदायों की अपेक्षा आख्यान समय तथा ऐतिहासिकों द्वारा किये गये मन्त्रार्थों पर अधिक विचार किया है। नैदान का उल्लेख तो केवल दो बार ही आया है, प्रथम स्याल शब्द की निरुक्ति करते हुए-

आसन्नः संयोगेन इति नैदानाः।

-निरुक्त ६।१०

दूसरा साम शब्द के निर्वचन में

ऋचां समं मेने इति नैदानाः।

– निरुक्त ७।१२

इन सम्प्रदायों का उल्लेख करते हुए यास्क ने उनसे अपने मतभेद दर्शाये हैं, जैसे नैरुक्त लोग सभी नामों को आख्यातज मानते हैं। वहीं अधिकांश वैय्याकरण इस पक्ष से सहमत नहीं हैं। इसी प्रकार मन्त्रों के अर्थ करते समय चत्वारिवाक्.... मन्त्र के अर्थ में नैरुक्त लोग चत्वारि का अर्थ ऋक्, यजु, साम और व्यावहारिक भाषा करते हैं, वहीं पर वैय्याकरण इसका अर्थ नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात करते हैं। आर्ष मत के अनुसार ये पद ओंकार व तीन महाव्याहृतियों के वाचक हैं। याज्ञिक पक्ष के अनुसार ये पद मन्त्र, कल्प, ब्राह्मण तथा व्यावहारिक भाषा के वाचक

हैं। आत्मप्रवाद सम्प्रदाय की सम्मति में ये पद पशु, वाद्य, मृग, आत्मा की बोलियां हैं। कुछ आचार्य, जिनका किसी सम्प्रदाय विशेष से सम्बन्ध नहीं है, उनके विचार से ये पद सर्प, पक्षी, रेंगने वाले प्राणी तथा व्यावहारिक बोलियाँ हैं।

– निरुक्त ९। १३

यास्क किसी ब्राह्मण ग्रन्थ का भी मत यहाँ पर दिखाते हैं। जो यास्क से प्राचीन है।

एक ओर मन्त्र का अर्थ करते समय यास्क ने नैरुक्तों का परिव्राजकों से मतभेद दिखाया है-

बहुप्रजा निर्ऋतिमाविवेश।

इसमें परिव्राजक इस मन्त्र का अभिप्राय 'बहुत सन्तान उत्पन्न करने वाला दु:ख प्राप्त करता है' ऐसा करते हैं। नैरुक्तों के मत से निर्ऋति का अर्थ पृथ्वी है, जिसमें बहुप्रजा-मेघ आविवेश=प्रविष्ट हुआ। **वर्ष कर्मेति नैरुक्ताः।** २। १ नैरुक्तों के मत से यह मन्त्र वर्षा के कर्म को बताने वाला है।

एक अन्य स्थान पर याज्ञिक पक्ष का उल्लेख इस प्रकार मिलता है – ऋग्वेद के **एकदा प्रतिधा** ८। ७७। ४ में सरांसि त्रिंशत् पद का अभिप्राय – **त्रिंशत् उक्थ पात्राणि** है जबकि इसे नैरुक्त- **त्रिंशत् अपरपक्षस्य अहोरात्राः, त्रिंशत् पूर्व पक्षस्य** मानते हैं।

याज्ञिकों के और नैरुक्तों के मतों का उल्लेख ७। ४ में भी हुआ है- जिस मन्त्र में देवता दिखाया न गया हो, याज्ञिक उस मन्त्र का देवता यज्ञ अथवा यज्ञाङ्ग को मानते हैं। इनके अभाव में प्रजापति को, जबकि नैरुक्त के मत में ऐसे मन्त्र नाराशंस देवता के हैं। निरुक्त के अनुसार नाराशंस मन्त्र वे हैं, जिनमें पुरुषों की स्तुति की जाये।

येन नराः प्रशस्यन्ते स नाराशंसो मन्त्रः।

– निरुक्त ९। ९

इसी प्रकार अनुमति राका याज्ञिकों के मत में पौर्णमासियां हैं, जबकि नैरुक्त उन्हें देवपत्नियां मानते हैं।

– निरुक्त ११। २९

सिनीवाली कुछ याज्ञिकों के मत में अमावस्यायें हैं, नैरुक्तों के अनुसार देवपत्नियाँ हैं।

– निरुक्त ११ ।३१

याज्ञिकों की दृष्टि से गौ- धर्मधुक् है, नैरुक्त उसे माध्यमिक वाक् अर्थात् बिजली का गर्जन=कड़क मानते हैं।

– निरुक्त ११। ३८

इसी प्रकार धेनु शब्द को दोनों भिन्न मानते हैं।

– ११। ४०

याज्ञिकों की भांति एक स्थान पर पूर्व याज्ञिकों का विचार भी निरुक्त में दिखलाया गया है। यास्क के विचार में वैश्वानर इसी पार्थिव अग्नि का नाम है। पूर्व याज्ञिकों के मत में वैश्वानर आदित्य है। यास्क आचार्य के मत में वह मध्यम देवता अर्थात् वायु या इन्द्र है। आचार्य यास्क स्वयं इससे सहमत नहीं हैं।

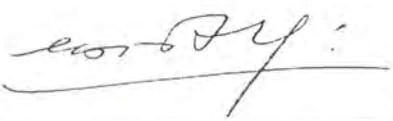

आगामी ऋषि मेला
२७, २८, २९ अक्टूबर २०१७, शुक्र, शनि, रविवार
को ऋषि उद्यान, अजमेर में होगा

जब तक मनुष्य सुख-दु:ख, हानि और लाभ की व्यवस्था में परस्पर अपने आत्मा के तुल्य दूसरे को न जानते तब तक पूर्ण सुख को प्राप्त नहीं होते, इससे मनुष्य लोग श्रेष्ठ व्यवहार ही किया करें। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.४०**

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है, वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को अपनी न्याय व्यवस्था से सुख देवे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३९

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग—साधना शिविर

दिनांक : १८ से २५ जून, २०१७

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे- समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखने आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा- सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।

१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

(: मार्ग :)

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं**। अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

कुछ तड़प-कुछ झड़प

-राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

एकेश्वरवाद का आन्दोलन-लाहौर की एक घटना:- स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के संन्यास-दीक्षा शताब्दी वर्ष पर उनके द्वारा वर्णित एक ऐतिहासिक घटना-एक प्रेरक प्रसंग आर्यमात्र-विशेष रूप से युवकों को भेंट किया जाता है। अपनी संन्यास-दीक्षा से कुछ ही समय पूर्व महात्मा जी ने एक उपदेश में यह प्रसंग सुनाया था। लाहौर में वच्छोवाली समाज का वार्षिकोत्सव था। शोभायात्रा को उस वर्ष आर्यों ने आपही यह निर्णय लिया कि नगर कीर्तन को लोहारी मण्डी के शाहआलमी द्वार पर समाप्त किया जाये। पुलिस ने तो पूर्व वर्षों की भाँति ही इसे आगे तक ले जाने की स्वीकृति दी थी। जब मुसलमानों को इस बात का पता चला तो उनका एक शिष्टमण्डल आर्यों से मिला।

उस समय आर्य एकेश्वरवाद के पुराने प्रभावशाली भजन बड़े जोश व भक्तिभाव से गाते जा रहे थे। उनकी भक्ति व मस्ती को देखकर उन्होंने कहा कि आप भी एकेश्वरवादी और हम भी एकेश्वरवादी। हम आपका स्वागत करना चाहते हैं। हमारे पर्व के कारण आपने अपना मार्ग क्यों बदला है? हम भी आपके वहदनियत (एक ही प्रभु की उपासना) के भजनों की तान सुनना चाहते हैं। जब उनकी सबीलों के समीप आर्य लोग पहुँचे तो प्रत्येक भजन मण्डली को आग्रहपूर्वक रोककर एकेश्वरवाद के गीत सुनाने को कहा गया।

तब भजन कैसे होते थे? 'तेरा मात पिता सुन दारा नहीं', 'प्रभु एक है वेद है उसकी वाणी', 'पत्ते-पत्ते की कतरण न्यारी तेरे हाथ कतरणी कहीं नहीं। कर दे वर्षा भर जल जंगल, आकाश में सागर दिखे नहीं।', 'पता पत्ता-पत्ता तिरा दे रहा है।'

आर्यो! अब मुर्दों और मरदों की, पेड़-पौधों की, नदियों की, जल-स्थल की पूजा बढ़ रही है। परिवार नियोजन के युग में नये-नये भगवान् जन्म ले रहे हैं। जो रब और रब्बनियाँ कभी सुनी ही नहीं थीं, उनके पूजा घरों में सर्वकामनायें पूरी करवाने वाले भक्तों की भीड़ देख लो। सब राजनेता वहीं जीत की कामना से जाते हैं। देश की एक भी समस्या के समाधान की कामना कौन से भगवान् ने, तीर्थ स्थल ने पूरी कर दी?

उठो! जड़ पूजा, मूर्त्तिपूजा, कबर पूजा, नर-नारी पूजा, ईश्वरेतर की सब प्रकार की पूजा से देश को बचाने का एकेश्वरवादियों फिर से प्रबल आन्दोलन छेड़ो। आओ! फिर से यह तान और गान सुनावें:-

न तू मक्का में, न मदीना में। न तू हर पौड़ी के ज़ीना में,

हर जगह ओ३म् का ज़लवा

फिर दिखला दिया ऋषि दयानन्द ने

वेदों का डंका आलम में, बजावा दिया ऋषि दयानन्द ने।

पशु-पक्षी का स्वाभाविक ज्ञान:- एक गत अंक में बताया गया था कि सृष्टि के आदि में मनुष्य के कल्याण के लिये परमात्मा से ही ज्ञान का आविर्भाव होता है। पशु-पक्षी आदि को परमात्मा उनके लिये आवश्यक स्वाभाविक ज्ञान जन्म के साथ ही दे देता है। मनुष्य की विशेषता सबके सामने है, परन्तु पशु-पक्षी की विशेषता पर मनुष्य कम ध्यान देता है। हमारे पड़ोस में कॉलेज के एक प्राध्यापक जो संघ से जुड़े हैं और प्रदेश भाजपा के एक बार अध्यक्ष भी रहे चुके हैं, उनके घर रात को चोर आ गये। जानने वाले पूछताछ करने, सहानुभूति दर्शाने प्रातःकाल आने लगे। हमें पता लगा, हम भी चले गये।

हर कोई पूछता, पड़ोसी का कुत्ता बड़ा भयंकर है, क्या वह चोरों के आने पर नहीं भौंका? वे यही सुनाते रहे कि वह तो बहुत भौंका परन्तु घर वालों ने यही समझा के वह सामने घर में पड़ी घास काटने वाली मशीन को मनुष्य समझकर भौंक रहा है। हमने भी जाते ही यही पूछना था। वे पहले ही यही बता रहे थे। यह कहानी पचासों ने सुनी। सब सुशिक्षित ही थे।

हमने पलटकर कहा, मनुष्य तो झाड़ी को मनुष्य और रस्सी को साँप समझ लेता है परन्तु कुत्ता, बिल्ली, चूहा आदि सब योनियाँ नकली व असली के भेद को जानती

हैं। कुत्ता मनुष्य को ही भौंकता व काटता है। मूर्त्ति को, चित्र को कभी किसी कुत्ते ने काटा ही नहीं। न ही मूर्त्ति देखकर कुत्ता कभी भौंकता है। प्लास्टिक की बिल्ली को देखकर चूहा न डरता है और न भागता है। ऐसे ही प्लास्टिक के चूहे पर बिल्ली कभी नहीं झपटती। यह तो मनुष्य ही है जो अपनी बनाई मूर्त्ति को भोग लगाता, नहलता और वस्त्र पहनाता है। यह जड़-चेतन का भेद नहीं जानता।

एक और बात, जो दु:ख आया ही नहीं और जो आकर चला गया उसकी कल्पना करके, याद करके पशु-पक्षी न डरते हैं, न दु:खी होते हैं। जब सामने जीवित सिंह हो तभी हिरण व गाय भागने लगते हैं। यह बातें उन्हें सुनाई तो सबने कहा, देखो! जिज्ञासु जी ने तो पते की बात कही। यहाँ तो कई आये, कई गये, परन्तु कुत्ते के स्वाभाविक ज्ञान की बात किसी को नहीं सूझी। हमने कहा, ''हम तो बचपन में ही आर्य भजनोपदेशकों से यह ज्ञान विषयक मौलिक तार्किक बातें सुनते आ रहे हैं।''

अभागा मनुष्य पूर्व की वैर, द्वेष, हानि, झगड़े की बातें याद करके और घाटा पड़ सकता है, इसकी कल्पना करके व्याकुल हो जाता है। जबकि पशु-पक्षी भूत-भविष्य की चिन्ता करता ही नहीं है। मनुष्य वर्तमान में सुख हो, कोई समस्या न हो तथापि कई वर्ष पूर्व पड़े भयङ्कर घाटे का स्मरण करके तड़प उठता है। यह पशु की मनुष्य से विशेषता है।

इतिहास की साक्षी स्तम्भ:- श्री धर्मवीर जी की आर्यसामाजिक पत्रकारिता पढ़कर हम फड़क उठे:-

ईं फ़ित्नः कि बरपा शुद व ईं शोर कि बरख़ास्त।
इल्ज़ाम ब गर्दूं मनेह अज़ मास्त कि बर मास्त।।

सम्भव है कि कभी पहले भी परोपकारी में इसे उद्धृत किया हो। इस्लाम के एक मर्मज्ञ विद्वान् साहित्यकार के इस पद्य को आर्य विद्वानों को अपने व्याख्यानों-प्रवचनों में विशेष रूप से प्रचारित करना चाहिये। इसे इस्लाम में वैदिक धर्म की गूञ्ज न कहें तो क्या मानें? मानवीय भाईचारे के लिये, जनहित के लिये इन सद्विचारों का प्रचार-प्रसार होना चाहिये। इससे सबका भला होगा। अंधविश्वास मिटेंगे। हिन्दू-मुस्लिम की निकटता बढ़ेगी। इसका भावार्थ यह है कि संसार में जो भी गड़बड़, अनर्थ, पाप, दु:ख, ताप, शोर-शराबा है, इसके लिये किसी के भाग्य को, भगवान् को दोष मत दो। यह हमारे ही दुष्कर्मों का फल है, जो हम भोग रहे हैं। कर्मफल सिद्धान्त ही सृष्टि का सबसे बड़ा ईश्वरीय नियम है।

इतिहास के नाम पर मिथ्या कथन:- आर्यसमाज तथा स्वराज्य संग्राम पर एक अंग्रेजी पुस्तक डी.ए.वी. के एक सम्पादक मण्डल ने प्रकाशित व प्रचारित की। इसमें इतिहास के अनुभवी विद्वान् तो एक ही थे। श्री वेद व्यास, बाबू दरबारीलाल, तिलकराज और प्रिं. कृष्णसिंह ने उस ग्रन्थ में क्या किया, यह उसमें पता ही नहीं चलता। न इनका आर्यसमाज के इतिहास व मिशन से कोई लेना-देना रहा है। आर्यसमाज के सत्संगों में भी कभी अपवाद रूप में दर्शन दे दिया करते थे। अपने घरों में इन्होंने आर्यसमाज को कितना घुसने दिया, इसके बारे में उनके साथी ही प्रकाश डाल सकते हैं। डॉ. के.सी. यादव ही इस मण्डल में इतिहास के अधिकारी विद्वान् थे।

एक विहंगम दृष्टि में इसमें कई मिथ्या कथन सामने आये। यह किसकी कृपादृष्टि हो गई? यथा- एक से अधिक बार श्रीयुत् को एक स्मरणीय देन 'परोपकारी' का स्तम्भ इतिहास की साक्षी है। इसमें उन्हें आचार्य विरजानन्द जी का विशेष सहयोग रहा। सन् १९८३ में 'परोपकारी' में स्वर्गीय श्री धर्मसिंह जी कोठारी की प्रबल प्रेरणा से हमने ऋषि के जीवन काल में स्थापित आर्यसमाजों की प्रामाणिक सूची की दस्तावेज़ प्रकाशित करवाई थी। इससे अलभ्य दस्तावेज़ों की सुरक्षा व प्रकाशन में हमारी रुचि बढ़ी।

धर्मवीर जी की प्रेरणा से आर्य इतिहासकार पं. विष्णुदत्त जी का एक दुर्लभ चित्र परोपकारी में प्रकाशित करवाया। प्रो. महेश प्रसाद मौलवी फ़ाज़िल का चित्र बड़े यत्न से खोजकर दिया। श्री ओम्मुनि जी ने श्री मोहनलाल सुखाड़िया के विवाह का उनका प्रार्थना पत्र तथा कई महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ इस स्तम्भ के अन्तर्गत परोपकारी को प्रकाशनार्थ उपलब्ध करवाये।

अभी श्री जितेन्द्रकुमार जी गुप्त के सहयोग से देश के मूर्धन्य उर्दू कवि आर्य गौरव श्री दुर्गासहाय 'सरूर' का

दुर्लभ चित्र खोजकर परोपकारी में प्रकाशित हुआ हैं। यह स्तम्भ परोपकारी की विलक्षणता व विशेषता है। यह बनी रहे। यह हमारा प्रयास रहेगा। देखते रहिये, इसमें हम निरन्तर क्या-क्या देते हैं।

परतवाड़ा का कन्या शिविर:- परतवाड़ा विदर्भ का समाज पूरा वर्ष सक्रिय रहता है। अभी स्वामी श्रद्धानन्द सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ ८० कन्याओं का एक शिविर लगाया गया। शिविर की आशातीत सफलता पर हमें गौरव है। हम श्री पंकज शाह के पुरुषार्थ, परमार्थ की किन शब्दों में प्रशंसा करें। सभा की ओर से पुरस्कृत होने वाली कन्याओं के लिये वैदिक साहित्य वहाँ भेज दिया गया है। आर्य मिशनरियों में श्री पंकज के अनुकरण की ललक होनी चाहिये।

इस्लाम में वैदिक धर्म की गूञ्ज:- हमने बड़े चाव से उर्दू के महाकवि अकबर की कुल्लियात का दूसरा भाग क्रय किया। हमें पता था कि आप हमारे प्रकाण्ड विद्वान् परोपकारी के सम्पादक पूज्य पं. पद्मसिंह जी शर्मा, महाकवि नाथूराम जी शङ्कर के बड़े प्रेमी सत्संगी थे। उनकी कुल्लियात का पाठ करते हुए उनके इस फ़ारसी पद्य में किशनसिंह जी को क्रान्तिकारी भगतसिंह का चाचा लिखा गया है। यह भ्रामक कथन है। किशनसिंह के चित्र के नीचे उनको शहीद भगतसिंह का पिता लिखा गया है, यह सत्य है। इसी पुस्तक में कहीं अन्यत्र देशभक्त अजीतसिंह को वीर भक्तसिंह का पिता भी लिखा गया है, यह भूल है। रायबहादुर दुर्गादास को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रधान बताना इतिहास का उपहास ही तो है। इस नाम का कोई व्यक्ति इस सभा का प्रधान नहीं रहा।

इसी पुस्तक के पृष्ठ १८९ पर लिखा है कि २१ सितम्बर १९०० के साप्ताहिक 'सद्धर्म प्रचारक' के पृष्ठ ४४४-४४५ पर महात्मा हंसराज जी का एक लेख प्रकाशित हुआ था। उसे इसमें उद्धृत भी किया गया है। इस अंक में पृष्ठ ४४४-४४५ ही नहीं है। इस अंक की तो छोड़िये, इसके आगे-पीछे के किसी अंक में महात्मा जी का कोई लेख हमें नहीं मिला। इतिहास प्रदूषित करने वाली कई कम्पनियाँ हैं। यदि कोई सद्धर्म प्रचारक में ऐसा कोई लेख दिखा दे तो हम अपनी भूल के लिए क्षमा माँग लेंगे। हमारी तो सबसे यही विनती है कि इतिहास में मिलावट, हटावट और बनावट नहीं होनी चाहिये। यह एक पाप कर्म है।

श्री रामचन्द्र के ऐसे-ऐसे नाम लेवा?:- वाल्मीकि ऋषि लिखित रामायण पर एक विहंगम दृष्टि डालने से पता चलता है कि श्री राम एक गुण सम्पन्न, यज्ञ रक्षक, ईश-भक्त, वेदनिष्ठ, पुरुषार्थी, परमार्थी, साहसी, पराक्रमी, कर्मठ, मर्यादा पुरुषोत्तम महापुरुष थे। पहले गली-गली में भिखारी यह कीर्तन करते थे:-

अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गये सबके दाता राम।।

कौन कहता है कि पक्षी अपना काम नहीं करते। अजगर काम न करे परन्तु हाथ लगाकर तो देखो, आपका काम तमाम कर देगा।

आज ही राम-भक्ति सिखाने की प्रेरणा देने वाला एक स्थूल अक्षरी बोर्ड देखा, उस पर यह सन्देश उपदेश पढ़कर हमें बड़ा धक्का लगा-

राम कहो, आराम मिलेगा।
सुबह नहीं तो शाम मिलेगा।।

श्री राम का जीवन कर्मण्यता सिखाता है या निकम्मा बनना? यह नये-नये कीर्तनकार हिन्दू जाति को वेद-शास्त्र से दूर करके नये-नये घातक कीर्तन और मन्त्र सिखाकर, जपाकर, आलसी, प्रमादी, सुखार्थी व कंगाल बना देंगे। ईश्वर-भक्ति ऊर्जा प्राप्ति के लिये है, न कि आराम परस्त बनने के लिए।

पं. गणपति शर्मा तथा उनका श्रीनगर शास्त्रार्थ:- हमने बहुत समय पहले भी 'सद्धर्म प्रचारक' के आधार पर पं. गणपति शर्मा जी के कश्मीर शास्त्रार्थ का इसी स्तम्भ में प्रामाणिक विवरण दिया था। किसी बुद्धिमान् भाई ने पुन: सुनी-सुनाई कल्पित कहानियों के प्रचारित होने पर 'पूर्ण पुरुष' पुस्तक आदि का विशेष उल्लेख कर तथ्यपरक जानकारी देने को कहा है। 'आर्य जीवन' में पं. गणपति शर्मा जी पर छपा लेख तो हमारी पुस्तक 'तड़प वाले-तड़पाती जिनकी कहानी' के ही आधार पर है, भले

ही इस पुस्तक का उल्लेख नहीं किया गया। 'पूर्ण पुरुष' पुस्तक में तो बहुत कुछ भ्रामक, कल्पित तथा दु:खद है, यह हमने उसके द्वितीय संस्करण की प्रस्तावना में संकेत दे दिया था। इस पुस्तक में तो इस शास्त्रार्थ के समय का महाराज तब कौन था, इसका भी कुछ अतापता नहीं दिया गया। लेखक को यह भी तो पता नहीं कि शास्त्रार्थ कहाँ हुआ। राज्य में आर्यसमाज पर प्रतिबन्ध था- यह कथन भी निराधार है। शास्त्रार्थ में सहस्रों श्रोता थे- यह भी गप्प है। लीजिये 'सद्धर्म प्रचारक' के २८ सितम्बर सन् १९०६ के पृष्ठ आठ पर प्रकाशित शास्त्रार्थ का पूरा समाचार आर्य जगत् की भेंट किया जाता है। इसी सम्बन्ध में महात्मा मुंशीराम जी की सम्पादकीय टिप्पणी फिर कभी दी जायेगी। कातिब की चूक से पादरी का नाम 'जानसन' की बजाये जॉनस्टन छप गया है। महाकवि शङ्कर ने 'जानसन' नाम लिखा है। उस काल के अन्य पत्रों में भी उसका यही नाम हमने पढ़ा है। सो समाचार के अनुवाद नाम शुद्ध ही दिया जा रहा है।

बनारस के प्रसिद्ध पादरी जानसन साहिब- कश्मीर में भाषण- ''रायसाहिब नारायणदास फ़ारण मनिस्टर की देख-रेख में १२ सितम्बर सन् १९०६ सायं छ: बजे श्रीमान् महाराजा महोदय जम्मू कश्मीर की अध्यक्षता में बनारस के विख्यात् पादरी जानसन साहिब का भाषण संस्कृत भाषा में हजूरी बाग में हुआ। श्रीमान् महाराजा महोदय राज्य अधिकारियों व श्रीमन्तों सहित पधारे। कश्मीर की समस्त पण्डित मण्डली तथा सब विद्वान् भी कार्यक्रम में सम्मिलित थे। पादरी महोदय ने अपने भाषण में कश्मीर की प्राचीन काल में विद्या की वृद्धि तथा वर्तमान में विद्या की न्यूनता का वर्णन करते हुए छ: दर्शनों के परस्पर विरोध तथा मुक्त अवस्था में जीव का जड़वत हो जाना सिद्ध किया तथा अद्वैतमत का खण्डन करते हुये यह बतलाया कि हिन्दुओं के शास्त्रों में अध्यात्म विद्या का ऐसा उत्तम वर्णन नहीं है, जैसा कि ख्रिस्त मत के ग्रन्थ बाईबल में पाया जाता है।

इस पर श्रीमान् महाराज जी की अनुमति से खड़े होकर शास्त्रों के प्रमाणों तथा युक्तियों द्वारा सब आक्षेपों का समुचित उत्तर दिया। इस पर पादरी महोदय ने हिन्दी में वार्तालाप आरम्भ कर दिया। जितने प्रश्न श्रीमान् पं. गणपति शर्मा जी ने पादरी पर किये थे, उनमें से एक का भी उत्तर वह नहीं दे सके। हर बार उत्तर देते समय नये-नये प्रश्न करने लगे। पादरी महोदय को बारम्बर यह कहा गया कि वह अपने कथनानुसार न्याय अथवा सांख्य का कोई ऐसा सूत्र प्रस्तुत करें, जिसे मुक्ति अवस्था में जीव का जड़वत् होना सिद्ध हो। बार-बार कहने पर भी पादरी साहिब केवल मौखिक रूप से भाष्यकारों, टीकाकारों को दुहाई दे देकर शास्त्रों का परस्पर विरोध बताते रहे। वह एक भी सूत्र व प्रमाण न दे सके। देर होने से महाराजा जी उठकर चले गये।

सायं आठ बजे सभा विसर्जित की गई। महाराजा महोदय के आदेशानुसार पादरी महोदय तथा पं. गणपति शर्मा जी के मध्य और शास्त्रार्थ १३ सितम्बर सन् १९०६ को सायं चार बजे को होना निश्चित हुआ [मन्त्री जी को शास्त्रार्थ का वृत्तान्त फिर भेजने को लिखा।]

- निवेदक

गुरबख़्शराय मन्त्री आर्यसमाज श्रीनगर कश्मीर''

इसके अन्त में महात्मा मुंशीराम जी की यह टिप्पणी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

''इस लेख के पश्चात् मन्त्री जी का पोस्टकार्ड आया है कि पादरी जानसन जी ने शास्त्रार्थ करने से इन्कार कर दिया है।''

अब जो कुछ इस शास्त्रार्थ के बारे में किंवदंतियाँ हैं, उन पर विराम लगना चाहिये। महाराजा तब रणवीर सिंह नहीं, प्रतापसिंह ही थे। हम इस पर अपने विचार अगले अंक में पाठकों की सेवा में रखेंगे।

पठनीय मराठी पुस्तक:- श्री नारायण जी कुलकर्णी द्वारा अनूदित पं. नरेन्द्र जी की आत्मकथा का मराठी अनुवाद माझी संघर्ष गाथा स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल परली, महाराष्ट्र से प्रकाशित हुई है। यह कार्य बहुत पहले हो जाना चाहिये था। इस सत्प्रयास के लिये अनुवादक प्रकाशक को बहुत-बहुत बधाई प्रत्येक मराठी प्रेमी व मराठी समझने वाले को इसके प्रसार में सहयोग करना चाहिये। आर्य तपस्वी डॉ. कुशलदेव जी को भावपूर्ण समर्पण प्रशंसनीय

सूझ है। प्रकाशकीय व प्रस्तावना भी पठनीय है। 'पिंजरे वाला शेर दहाड़ा' इस विनीत की प्रसिद्ध रचा भी इसमें दी गई है। यह ऊर्जा का स्रोत बार-बार प्रकाशित होता रहे।

हिन्दुओं की दुर्दशा व पतन का कारण:- सात फ़रवरी के दैनिक भास्कर के यहाँ के संस्करण में एक विस्तृत समाचार का प्रवचन का शीर्षक ऐसा है- ''भागवत सुनने से धुल जाते हैं सभी पाप'' -दिव्यानन्द

यह पाप कर्म करने का प्रबल प्रोत्साहन है। पाप छुड़ाने का उपदेश कोई नहीं देता। गीता, वेद-शास्त्र के कर्मफल के सिद्धान्त की चर्चा कोई करता ही नहीं। एक और प्रवचन का शीर्षक है- ''भागवत सभी इच्छाओं की पूर्ति करती है।'' -आत्मानन्द। परमार्थ-पुरुषार्थ कोई क्यों करें? देश में राममन्दिर जैसे कई आन्दोलन होते रहे हैं। इच्छा तो करोड़ों करते ही होंगे। पूर्ति हो नहीं रही। वेद-शास्त्र के विपरीत ऐसे-ऐसे सस्ते उपदेश (Cheap papularity) का टोटका है। तप, त्याग, कर्मण्यता, सेवा, संघर्ष तथा सतत् साधना बलिदान ही कल्याण का मार्ग है। पुराणों की कथाएँ व प्रचार विनाश व ह्रास का राज पथ है।

वेदोपदेश-श्री कृष्ण सन्देश:- वेदादेश है- सुपथ गामी बनो, कर्म करते हुये जियो। संयमी, सदाचारी बनो। अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूक्त के २६ मन्त्रों में दस बार तप करने की आज्ञा है। श्री कृष्ण ने गीता में कहा है- जिसने इन्द्रियों को वश में किया हो, वही प्रतिष्ठित (वी.आई.पी.) है। कीर्तनकार गुरुडम के व्यापारी बाबे इन्द्रियों को वश में करने के कठिन मार्ग को अपनाने की बजाय मक्खन चुराने तथा गोपियों से लीला रचाने के गाने सुना-सुना कर श्री कृष्ण की अपकीर्ति का कारण बनते हैं। यह जाति को डुबोने वाला प्रचार है। 'महाराज लायबल केस' रास लीला का ही परिणाम था। यदि गली-गली, ग्राम-ग्राम, नगर-नगर में गीता का इन्द्रियों के वशीकरण का सन्देश सुनाया जाये तो 'सामूहिक बलात्कार' की कलङ्ककारी लज्जाजनक घटनायें रुक जायें। व्यापारी, बाबों व कीर्तनकारों ने धर्मप्रचार का धन बटोरने की दुकान बना रखा है। प्रजा सुधरे तो कैसे? राजनेताओं की भी मौज बनी हुई है।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नकद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें। **- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३**

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं, वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है। **- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१**

जब तक सब की रक्षा करने वाला धार्मिक राजा वा आप्त विद्वान् न हो तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्षसुख से अधिक कोई सुख है।

-महर्षि . दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५२

वैचारिक क्रान्ति हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन-चरित्र प्रचार-प्रसार की भव्य योजना

विचार किसी भी देश, समाज व जाति की अमूल्य निधि (सम्पत्ति) है। जिसके पास में ठोस श्रेष्ठ विचार नहीं या फिर विचार को फैलाने के साधन नहीं हैं या फिर जो व्यक्ति, समाज व राष्ट्र अपने विचारों की अवहेलना करते रहते हैं, उनका अस्तित्त्व भी एक दिन समाप्त प्राय: हो जाता है। आज हर सम्प्रदाय, समाज, समूह व देश अपने विचारों का प्रचार-प्रसार बड़ी प्रबलता से हर क्षेत्र में व हर साधन से कर रहा है, लेकिन काफी समय से आर्यसमाज में वैचारिक शिथिलता देखी जा रही है। इस शिथिलता को दूर करने का मात्र एक ही उपाय है कि हम सभी आर्य जन ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत **अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का प्रचार नये शिक्षित लोगों में करें।** इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर सभा के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला दिल्ली में वर्ष २०१४ से लगातार इन ग्रन्थों का नि:शुल्क वितरण किया जा रहा है। प्रचार-प्रसार की योजना तैयार की गयी है।

सत्यार्थप्रकाश ही क्यों?-१. यदि कोई व्यक्ति, समाज, समूह, संस्था या राष्ट्र एक ग्रन्थ (पुस्तक) पढ़कर विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना चाहे तो यह सत्यार्थप्रकाश से ही सम्भव है। २. आज के दूषित वातावरण में वैदिक वाङ्मय को ठीक-ठीक जानने हेतु, पढ़ने-पढ़ाने हेतु प्रथम सत्यार्थप्रकाश और महर्षि के अन्य ग्रन्थों का पढ़ना-जानना अत्यन्त आवश्यक है। ३. दर्शनशास्त्र, इतिहास, भारतीय परम्परा, कर्त्तव्य, धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य तथा मानवता आदि क्या हैं? - यह सारी जानकारी सत्यार्थप्रकाश से प्राप्त होती है व होगी। ४. पाखण्ड, मक्कारी, कुरीतियों व बुराइयों का नाश भी सत्यार्थप्रकाश से सम्भव है। ५. सत्यार्थप्रकाश व ऋषि के अन्य ग्रन्थों की उपस्थिति में कोई विधर्मी अपनी शेखी नहीं मार सकता तथा किसी भी हिन्दू को बहकाकर विधर्मी नहीं बना सकता। ६. सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव ने न जाने कितनों का जीवन ही बदल डाला। सत्यार्थप्रकाश के जोड़ की दूसरी पुस्तक दुर्लभ है, जिसमें ज्ञान का अमूल्य खजाना भरा पड़ा है। इसलिए इसका प्रचार-प्रसार अनिवार्य है, जरूरी है। **योजना का विवरण निम्न प्रकार का होगा**-१. सत्यार्थप्रकाश हिन्दी में आकार लगभग ६०० पृष्ठ व साईज डिमाई आकार में होगा। लागत मूल्य १००/- रुपये प्रति पुस्तक। २. ऋषि जीवन चरित्र हिन्दी में लगभग १६४ पृष्ठ व साईज डमई आकार में। लागत मूल्य ६०/- रुपये प्रति पुस्तक। ३. महर्षि द्वारा रचित पुस्तक आर्याभिविनय हिन्दी में ६४ पृष्ठ व साइज डिमाई आकार में, लागत मूल्य ३०/- रु. प्रति पुस्तक।

नोट-यह साहित्य वैचारिक क्रान्ति के लिए व वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के लिए गैर आर्यसमाजी सज्जनों व संस्थानों आदि को नि:शुल्क या अल्प मूल्य में वितरित किया जायेगा। साहित्य का ठीक-ठीक उपयोग हो व योग्य शिक्षित विचारवान् व्यक्तियों तथा संस्थानों तक पहुँचे इसके लिए अच्छी वितरण व्यवस्था की जाएगी। योग्य प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं का चयन कर कार्य में नियुक्त किया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति, संस्था आदि से एक फार्म भरवाया जायेगा, जिसमें उनका पूर्ण पता सम्पर्क आदि हो, जिससे भविष्य में परिणाम का मूल्यांकन किया जा सके। ग्रन्थों की प्रामाणिकता, शुद्धता व साज-सज्जा सुन्दरता का विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस प्रचार-प्रसार योजना का उद्देश्य सत्यार्थप्रकाश व महर्षि के जीवन-चरित्र के प्रचार-प्रसार के माध्यम से मानव मात्र का कल्याण करना है। यह प्रचार-प्रसार मुख्य रूप से शिक्षित गैर आर्यसमाजी लोगों के लिए होगा। यह कार्य पूर्णरूप से महर्षि के मन्तव्यों के अनुरूप हो इसका विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस कार्य की सफलता के लिए सभी आर्यजनों से, समाजों से व संस्थानों से निवेदन है कि इस महान् कार्य में तन-मन-धन से अपना सहयोग करने व अपने इष्ट मित्रों को भी सहयोग करने की प्रेरणा करें।

नोट-अपना आर्थिक सहयोग आप परोपकारिणी सभा अजमेर के नाम प्रेषित करते समय **सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार शीर्षक** अवश्य लिखें। धन प्रेषित करने हेतु आप चैक, ड्राफ्ट व सीधे राशि सभा के बैंक खाते में जमा करवाकर जमा पर्ची की प्रतिलिपि प्रेषित कर देवें या फिर ईमेल, दूरभाष द्वारा सूचित कर सकते हैं। धन्यवाद।

खाता धारक का नाम-**परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**09110400057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

नोट : इस योजना हेतु दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

सम्पर्क : मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

जिज्ञासा समाधान – १३१

– आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा – १ आदरणीय आचार्य जी, प्रणाम

मैं जानना चाहता हूँ कि 'मन' क्या चीज है? इसकी परिभाषा क्या है? क्या यह आत्मा व बुद्धि से अलग तत्त्व है? मन के विषय में अक्सर हम कहा करते हैं, 'मन प्रसन्न है', 'मन दु:खी है', 'मन कर्मों का दर्पण है', 'काम में मन नहीं लगता', 'मन चंचल है' आदि-आदि अनेक बातें मन के विषय में कही जाती हैं। आखिर इस मन को कैसे समझा जा सकता है?

-अशोक प्रभाकर चोणा,
अम्बाला छावनी, हरियाणा।

समाधान– मन प्रकृति से बना हुआ आत्मा का एक साधन है जो कि जड़ वस्तु है, चेतन नहीं। आत्मा इन्द्रियों से विषयों का ज्ञान सीधा-सीधा नहीं कर सकता। इन्द्रियों के साथ जब आत्मा मन को जोड़ता है तभी विषयों का ज्ञान होता है। संकल्प-विकल्प आदि करने का काम मन का है। मन एक समय में एक ही काम करने का सामर्थ्य रखता है। मन आत्मा और बुद्धि से पृथक् तत्त्व है।

मन कर्त्ता नहीं है अपितु करण है। जहाँ कहीं मन को कर्त्ता कहा है वा कहा जाता है, वह गौण रूप से कहा जाता है। मन के अन्दर परमेश्वर ने सामर्थ्य बहुत अधिक रख रखा है। जो आत्मा जितना अधिक ज्ञान रखता है, वह उतना ही मन से अधिक काम लेता रहता है। जैसे किसी शिल्पी ने किसी मशीन में अनेक कलपुर्जे लगा रखे हों। वह शिल्पी इस मशीन से होने वाले सभी कार्यों से परिचित है। वह इससे अनेक कार्य ले सकता है। किन्तु जो सभी कार्य करने की क्षमताओं को नहीं जानता, वह उससे एक-दो काम ही ले पाता है। वैसे ही मन के विषय में जानें।

मन को बहुत सामर्थ्ययुक्त परमेश्वर द्वारा बनाया हुआ होने पर भी आत्मा उससे एक समय में एक ही काम ले सकता है, क्योंकि परमेश्वर ने बनाया ही ऐसा है। हमें जो एक समय में मन के द्वारा अनेक कार्य होते दिखाई देते हैं, वे इसलिए कि परमात्मा ने इसको बहुत तीव्र गति वाला बनाया है। इसकी गति इतनी तीव्र है कि हम अनेक कार्यों के बीच के समय को पकड़ नहीं पाते। हाँ विद्वान्, साधक, योगी व्यक्ति तो इसकी गति को समझ, पकड़ लेते हैं। जैसे हमें कमल के सौ पत्तों की तह में सुई से एक साथ छेद होता दिखाई देता है, वैसे मन से अनेक कार्य होते दिखाई देते हैं। इसमें यदि ध्यानपूर्वक देखा जाये तो पता लगता है कि जैसे कमलपत्र एक साथ छिदते दिखते हुए भी एक साथ, एक बार में नहीं छिदते, अपितु ऊपर से एक-एक पत्ते में क्रम से छेद होता है, वैसे ही मन से एक साथ अनेक कार्य एक साथ होते प्रतीत हुए भी एक साथ, एक बार में न होकर क्रमश: होते हैं।

मन प्रकृति से निर्मित होने से जड़ है और आत्मा को ज्ञान कराने में प्रमुख साधन है। इन्द्रिय और आत्मा के मध्य में मन न हो तो आत्मा को बाह्य जगत् का कोई ज्ञान न हो सकेगा। क्यों न आँख खुली हुई हो, किसी रूप की ओर भी हो, किन्तु आँख से सम्बन्ध जब तक मन का नहीं होगा, तब तक आत्मा को रूप का ज्ञान भी नहीं होगा। इसी प्रकार अन्य इन्द्रियों व विषयों के बारे में जानें।

जब व्यक्ति को यह निश्चय होने लगता है कि मन जड़ वस्तु है, इसको चलाने वाला मैं (आत्मा) हूँ, तब वह यह नहीं कहेगा कि मन दु:खी है, सुखी है, मन काम में नहीं लगता आदि। ऐसा गौण कथन तो हो सकता है, किन्तु जो मन के ऊपर आश्रित होकर ऐसा बोलता है वह मन को चेतन मानकर बोलता है, जो कि उसका यह मिथ्या ज्ञान है। आत्मा को मन का स्वामी मानने वाला मनोजयी होने लगता है। ऐसा मनोजयी व्यक्ति अपने मन को किसी भी विषय से हटा सकता है और अन्य किसी भी विषय में लगा सकता है। ऐसा मनोजयी व्यक्ति संसार पर राज करे न करे, किन्तु संसार के विषयों पर अवश्य राज करता है।

मन परमात्मा के द्वारा प्रदत्त आत्मा के लिए एक दिव्य साधन है, इस दिव्य साधन का प्रयोग कर आत्मा अपने अभीष्ट प्राप्त कर सकता है, कर लेता है। आत्मा मन से अनेकों कार्य लेता है, जब जो कार्य आत्मा मन से लेता

है, तब उस कार्य के आधार पर मन का वैसा नाम दे दिया जाता है, शतपथ ब्राह्मण में ऐसी चर्चा की गई है-

''कामः संकल्पो विचिकित्सा श्रद्धाऽश्रद्धा
धृतिरधृतिर्ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्
सर्वं मन एव तस्मादपि पृष्ठत उपस्पृष्टो
मनसा विजानाति।''

- श. १४.४.३.९

कामः- प्रथम विचार ही करके सब उत्तम व्यवहारों का आचरण करना और बुरों को छोड़ देना इसका नाम काम है।

संकल्पः- जो सुख और विद्यादि शुभ गुणों को प्राप्त होने के लिए प्रयत्न से अत्यन्त पुरुषार्थ करने की इच्छा है, उसको संकल्प कहते हैं।

विचिकित्साः- जो-जो काम करना हो, उसको प्रथम शंका कर-करके ठीक निश्चय करने के लिए जो सन्देह करना है, उसका नाम विचिकित्सा है।

श्रद्धाः- जो ईश्वर और सत्य-धर्मादि शुभ गुणों में निश्चय से विश्वास को स्थिर रखना है, उसको श्रद्धा जानना चाहिए।

अश्रद्धाः- अर्थात् अविद्या, कुतर्क, बुरे काम करने, ईश्वर को नहीं मानने और अन्याय आदि अशुभ गुणों से सब प्रकार से अलग रहने का नाम अश्रद्धा समझना चाहिए।

धृतिः- सुख-दुःख, हानि-लाभ आदि के होने पर भी अपने धीरज का न छोड़ना, उसका नाम धृति है।

अधृतिः- बुरे कामों में दृढ़ न होने को अधृति कहते हैं।

ह्रीः- अर्थात् जो झूठे आचरण करने और सच्चे कामों को नहीं करने में मन को लज्जित करना है, उसको ह्रीः कहते हैं।

धीः- जो श्रेष्ठ गुणों को शीघ्र धारण करने वाली वृत्ति है, उसको धीः कहते हैं।

भीः- जो ईश्वर की आज्ञा अर्थात् सत्याचरण धर्म करना और उससे उलटे पाप के आचरण से नित्य डरते रहना अर्थात् ईश्वर हमारे सब कामों को सब प्रकार से देखता है, ऐसा जानकर उससे सदा डरना कि मैं जो पाप करूँगा तो ईश्वर मुझ पर अप्रसन्न होगा, इसको भीः कहते हैं। ये सब कार्य मन के हैं।

विशेष सूचना

परोपकारी-पत्रिका के सभी पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि डॉ. धर्मवीर जी से सम्बन्धित कोई पत्र, चित्र, ऑडियो, वीडियो आदि आपके पास हों तो कृपया सभा के पते पर अवश्य ही भिजवा देवें।

डॉ. धर्मवीर जी के जीवन पर प्रकाशित होने वाले विशेषांक के लिए जिन भी महानुभावों के पास उनसे सम्बन्धित कोई भी संस्मरण या कविता आदि हों, वे भी अतिशीघ्र सभा को भेजने का कष्ट करें, ताकि आपके लेख विशेषांक में प्रकाशित किये जा सकें।

ई-मेल-**psabhaa@gmail.com**

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज,

अजमेर-३०५००१ (राज.)

राजा और प्रजा जन परस्पर सम्मति से समस्त राज्य व्यवहारों की पालना करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.२६

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित व उपलब्ध नये संस्करण

१. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (२ भाग में)

मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - **प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६**

२. महर्षि दयानन्द का महत्त्वपूर्ण पत्र-व्यवहार

मूल्य - रु. ४००/- पृष्ठ संख्या - ६१६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

३. 'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरित:

मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या- १९२

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिल जले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

४. इतिहास की साक्षीः लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - ९६

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

५. असली महात्मा (हिन्दी)

मूल्य - रु. २००/- पृष्ठ संख्या - २४७

यह पुस्तक मूलरूप से तेलुगु में लिखी गई है। लेखक श्री एम.वी.आर. शास्त्री ने जिस शोधपूर्ण ढंग से और जिस सरसता से इस पुस्तक को लिखा है, उससे दस्तावेजों में रुचि रखने वालों और उपन्यास में रुचि रखने वालों के लिये भी यह एक अतुलनीय ग्रन्थ है। हिन्दी में अनुवाद करते समय श्री जे.एल. रेड्डी ने लेखक के मूल भावों को जिस दक्षता से संजोया है, उससे हिन्दी पाठकों को ये ऐतिहासिक दृष्टि वाला ग्रन्थ किसी उपन्यास से कम नहीं लगेगा।

६. जिज्ञासा-विमर्श लेखक-आचार्य सोमदेव

मूल्य - रु. १००/- पृष्ठ संख्या - २५८

आध्यात्मिक क्षेत्र में सूक्ष्म दार्शनिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों का शास्त्रीय एवं तर्क-सम्मत समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्न बहुत जटिल होते हैं। विद्वान् लेखक ने अपने विस्तृत स्वाध्याय एवं ऊहा के बल पर ऐसे सभी प्रकरणों में सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। कालान्तर में सन्दर्भ हेतु काम आने वाला ग्रन्थ सिद्ध होगी, क्योंकि अधिकांश समाधान महर्षि कृत ग्रन्थों, वेदों एवं वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के आधार पर किये गए हैं। वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि की दृष्टि से भी यह एक उपयोगी पुस्तक है।

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर की पुस्तकों की राशि ऑनलाईन जमा कराने हेतु

बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या - **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

विलक्षण महर्षि-दयानन्द जी

-महात्मा चैतन्यमुनि

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ऐसे ऐतिहासिक महापुरुष हैं जो अपने आप में अनुपम एवं विलक्षण हैं। वे ईश्वर-भक्त, योगाभ्यासी, वीतराग संन्यासी, तपस्वी, त्यागी, ब्रह्मचारी, वित्तैषणा-पुत्रैषणा-लोकैषणा रहित, सत्यान्वेषी, शास्त्रार्थ-समर के अजेय योद्धा, राष्ट्र-भक्त, वैदिक-संस्कृति के पोषक तथा व्याकरण के अद्वितीय विद्वान् थे। बड़े-से-बड़ा प्रलोभन भी उन्हें अपने आदर्शों से विमुख नहीं कर सका। उनके सामने किंचित-मात्र भी अपना किसी प्रकार का स्वार्थ नहीं था, बल्कि उन्होंने अपना सर्वस्व मानव-मात्र की सेवा में समर्पित कर रखा था। रात-दिन बस एक ही चिन्ता कि आर्यावर्त्त की ज्ञान-गरिमा को पुन: प्रचारित व प्रसारित करके समृद्ध कैसे करें ताकि हमारा वही प्राचीनतम खोया हुआ गौरव हमें प्राप्त हो सके। उनका मानना था कि महाभारत के भयंकर युद्ध के समय से ही इस विश्व-गुरु आर्यावर्त्त का पतन आरम्भ हुआ और तत्त्व-वेत्ता, आत्म-वेत्ता एवं वेद-वेत्ता ऋषियों के अभाव में यह पतन निरन्तर और अधिक आत्मघाती होता चला गया। जो भी तथाकथित समाज सुधारक कार्यक्षेत्र में निकला, वही किसी न किसी अपनी ऐषणा का शिकार होकर इस महान् भारत को रसातल की ओर ही ले जाता रहा। किसी में भी इतना साहस नहीं था कि ऐषणारहित होकर एक ईश्वर, एक धर्म तथा मानव-मात्र के उत्थान् के लिए एक जीवन-पद्धति की उद्घोषणा कर सके। इस प्रकार ये दिशाहीन तथाकथित समाज-सुधारक, गुरु, पैगम्बर एवं मसीहा मानवता को और भी अधिक खण्डित करने का ही पाप करते रहे।

वर्तमान में स्थिति और भी अधिक विकट से विकटतर होती जा रही है। दिन-प्रतिदिन नये-से-नया कोई व्यक्ति उठ खड़ा होता है और अपने लिए एक नई ही जमात अलग से पैदा कर लेता है। अलग-अलग मनुष्यकृत ग्रन्थों को मान्यता मिल रही है, अलग-अलग गुरु-मन्त्र दिए जा रहे हैं, अलग-अलग पूजा-पद्धतियाँ प्रचलित हो रही हैं, परमात्मा की उपासना के स्थान पर व्यक्तियों की पूजा-अर्चना हो रही है.....उन्हीं की आरतियाँ उतारी जा रही है....उन्हीं की बड़ाई में भजन गाये जा रहें हैं....धर्म एक पाखण्ड बन गया है....योग एक व्यवसाय बन गया है.....कितना बड़ा अपराध हो रहा है.....बड़े-बूढ़े सब दिशाहीन हो रहे हैं....भावी पीढ़ी किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो रही है......राष्ट्र टूटने की कगार पर है....सामाजिक समरसता छिन्न-भिन्न हो रही है....अनाचार है, दुराचार है, भ्रष्टाचार है, द्वेष है, घृणा है, जातिवाद है, मत-मज़हबवाद है.....चारों ओर आतंकवाद का वातावरण है....यह सब हो रहा है अपने-अपने स्वार्थों के कारण। बीच में से यदि अपना-अपना स्वार्थ हट जाए तो आज भी एक आदि वैदिक धर्म की स्थापना हो सकती है, एक ईश्वर की ही उपासना हो सकती है, सबका एक ही गुरु-मन्त्र हो सकता है, सामाजिक समरसता स्थापित हो सकती है और अपना यह देश पुन: विश्वगुरु बन सकता है। विश्व-बन्धुत्व का सपना साकार हो सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपने आपमें कितने अनुपम एवं विलक्षण व्यक्तित्व के मालिक थे कि उन्होंने कहीं भी, कभी अलग मत चलाने की कल्पना तक नहीं की। अपनी स्तुति, अपनी पूजा तथा अपना अलग से वर्चस्व स्थापित करना तो दूर रहा, इस प्रकार की सोच भी उनके लिए न्यायकारी परमात्मा की दृष्टि में महान् अपराध था। उनके लिए तो ईश्वरीय ज्ञान 'वेद' ही सर्वोपरि रहा। महाभारत काल से पूर्व जितने भी ऋषि-महर्षि हुए, तत्त्व-वेत्ता हुए, आचार्य हुए, महापुरुष हुए-किसी ने भी अपना अलग मत या सम्प्रदाय चलाने का अपराध नहीं किया। ब्रह्मा, शिव, विष्णु, मनु, वशिष्ठ, विश्वामित्र, लोमश, याज्ञवल्क्य, गौतम, कणाद, कपिल, पतजंलि, जैमिनी, व्यास, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, योगेश्वर कृष्ण आदि अनेक दिव्य विभूतियों के लिए ईश्वरीय-ज्ञान वेद ही सर्वोपरि था। आज व्यक्ति का इतना अधिक अध:पतन हो गया है कि अज्ञानी, अनपढ़, कु पढ़, व्याकरण और वेद-विहीन व्यक्ति भी लोगों को धर्म, कर्म, उपासना, नाम व मन्त्र का उपदेश

देकर दिग्भ्रमित करने का महापाप कर रहे हैं। व्यक्ति द्वारा किए गए बुरे कर्मों से छुटकारा दिलवाकर भवसागर पार कराने की गारण्टी दे रहे हैं तथा मूर्ख लोग उनके झांसे में आकर अपना लोक-परलोक बिगाड़ रहे हैं। अविद्या एवं अज्ञानता से भरपूर नई-नई अप्रामाणिक पुस्तकें लिखकर उन्हें सर्वमान्य घोषित करने का अधर्म कार्य कर रहे हैं। तनिक भी लज्जा नहीं, परमात्मा का भय नहीं....तनिक विचार करें कि क्या ये तथाकथित स्वयं को गुरु-ज्ञानी घोषित करने वाले लाल-बुझक्कड़ उन प्राचीन ऋषियों-महर्षियों, आप्त-महापुरुषों, आचार्यों एवं तत्त्व-वेत्ताओं से भी बड़े हो सकते हैं.....?

इसे परमपिता परमात्मा की अपार कृपा और भारतवर्ष का सौभाग्य ही कहा जाएगा कि आधुनिक युग में उपरोक्त ऋषियों-महर्षियों की ही परम्परा में दण्डी स्वामी विरजानन्द जी के विलक्षण शिष्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी जैसे मनीषी का प्रादुर्भाव हुआ, जिनके लिए वेद ही सर्वोपरि था। जिनके लिए उपरोक्त ऋषि-महर्षि, आचार्य एवं आत्म-वेत्ता ही अनुकरणीय थे। उन्होंने वेद को अपौरुषेय अर्थात् चार ऋषियों के माध्यम से स्वयं परमात्मा द्वारा दिया गया ज्ञान घोषित किया तथा वेदों के अतिरिक्त शेष समूचे संस्कृत वाङ्मय को दो भागों में विभक्त करते हुए आर्ष और अनार्ष दो संज्ञाएँ दी। वेदानुकूल उपरोक्त ऋषियों -महर्षियों द्वारा प्रणीत ग्रन्थों को उन्होंने आर्ष तथा महाभारत काल के बाद की सामान्य मनुष्यों द्वारा लिखी पुस्तकों को अनार्ष घोषित किया। उन्होंने आर्ष एवं अनार्ष ग्रन्थों में भेद करने के लिए कुछ सूत्र भी प्रस्तुत किए। आर्ष ग्रन्थों के आरम्भ में प्रायः अथ अथवा ओम् शब्द मिलता है जबकि अनार्ष पुस्तकों का दुर्गायै नमः, सरस्वत्यै नमः, नारायणाय नमः तथा श्रीगुरुचरणारविन्दाभ्यां नमः आदि शब्दों से आरम्भ किया जाता है। समस्त आर्ष ग्रन्थ सार्वभौमिक सत्य का प्रतिपादन करते हैं और संशयनाशक एवं लोकोपकारक हैं, परन्तु अनार्ष ग्रन्थ भ्रमोत्पादक तथा सांप्रदायिक संकीर्णता, द्वेष, घृणा एवं प्रमाद से भरे हुए हैं। इनमें परस्पर गहरा मतभेद है तथा जन-साधारण में भी भेदक बुद्धि पैदा करते हैं। आर्ष गन्थों की टीकाएं सर्वमान्य एवं आप्त मनीषियों द्वारा लिखी गई हैं और अनार्ष ग्रन्थों की टीकाएँ सामान्य व्यक्तियों ने लिखी हैं। ये तो आर्ष तथा अनार्ष ग्रन्थों के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश हैं मगर आज तो तथाकथित गुरुओं, सन्तों, पीरों और पैगम्बरों द्वारा इससे भी निम्नस्तर की पुस्तकें लिखी जा रही हैं और उन्हें ही अपनी-अपनी जमात में सर्वमान्य घोषित करके 'बाबावाक्यं प्रमाणम्' की कुरीति एवं कुनीति सिर चढ़कर बोल रही है.... अन्धों के द्वारा अन्धों को मार्ग दिखाने वाली बात चरितार्थ हो रही है इसलिए आदि ऋषि-महर्षियों की परम्पराओं के पोषक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के चिन्तन को आज आत्मसात् करने की नितान्त आवश्यकता है।

परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीर दल अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में

बालक-बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु

संभाग स्तरीय आर्यवीर दल शिविर

का भव्य आयोजन

दिनांक : १४ मई २०१७ रविवार से २१ मई २०१७ रविवार तक

एवं

आर्य वीरांगना शिविर

दिनांक : २८ मई २०१७ रविवार से ०४ जून २०१७ रविवार तक

स्थान : ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.)

सम्पर्क सूत्र : ०९४६००१६५९०, ८८२३९४५९५६

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में वर्ष २०१२ से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA. AJMER)

१. बैंक का नाम-भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-आई.डी.बी.आइ, पावर हाउस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

लोकोत्तर धर्मवीर

-तपेन्द्र वेदालंकार

१९७२ में मैं गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में वेदालंकार में प्रवेश हेतु गया तब छात्र धर्मवीर श्रद्धा निकुञ्ज में रहते थे। आम का बाग, उसमें खपरैल की कुटिया, निवास करता एक आकर्षक सुन्दर युवक, धोती-कुर्ते में झलकता भव्य व्यक्तित्व। सौभाग्य से मुझे भी कुछ समय श्रद्धा निकुञ्ज में उनका सान्निध्य प्राप्त हुआ था। अध्ययन काल में भी वे साधारण छात्र नहीं थे, विशिष्टता उनके प्रत्येक कृत्य से स्पष्ट झलकती थी। व्यवहार, विचार, भाषा, कर्म, सिद्धान्त, दृढ़ता, नम्रता, उदारता-सभी में तो असाधारण थे। पं. भगवद्दत्त वेदालंकार एम.ए. गुरुकुल पत्रिका के सम्पादक थे, उन्होंने धर्मवीर जी को लिखा कि दो-तीन मास से गुरुकुल के समाचार प्रकाशित नहीं हो सके हैं, अतः अब तुम यह कार्य संभाल लो और प्रत्येक मास की एक तारीख को समाचार छपने के लिए दे दिया करो। धर्मवीर जी १९७१ से १९७४ तक गुरुकुल पत्रिका के अवैतनिक उपसम्पादक रहे। उनकी कार्यकुशलता से प्रभावित होकर पण्डित जी ने उन्हें अतीव योग्य तथा उच्चकोटि का विद्वान् तथा सम्पादन कला में अतीव प्रवीण बताया। ०२.०६.७१ को आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति लिखते हैं- १९६४ से १९६६ तक विश्वविद्यालय के नियमित छात्र के रूप में विद्या विनोद परीक्षा उत्तीर्ण की, हिन्दी-संस्कृत प्रतियोगिताओं में व्यक्तिगत व संस्थागत पुरस्कार प्राप्त किये। इनकी भाषण शैली ओजपूर्ण है। ऐसे कई अन्य भी उदाहरण हैं। आर्यसमाज के उद्भट विद्वानों द्वारा किसी छात्र के विषय में ऊपरलिखित शब्दावली का प्रयोग सहज सुलभ नहीं होता, उसके लिए छात्र का धर्मवीर होना आवश्यक है।

दिल्ली विश्वविद्यालय की इन्द्र विद्यावाचस्पति संस्कृत वाक्प्रतिस्पर्धा (जनवरी-१९७३) हो या अखिल भारतीय कालिदास स्मृति महोत्सव (१९७२) की संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता हो-निर्णायकों द्वारा छात्र धर्मवीर को प्रथम स्थान से कम तो कभी दिया ही नहीं गया।

गुरुकुल में यह परम्परा थी कि कोई आचार्य यदि कुछ दिन के लिए अवकाश पर जाते थे तो कोई एक छात्र सुरक्षा हेतु उनके निवास पर रह लेता था। एक बार आयुर्वेद महाविद्यालय के एक प्रोफेसर सप्ताह भर के लिए अवकाश पर जा रहे थे। उनकी समस्या यह थी कि उनके इष्टदेव की दीपक आरती कौन करे। धर्मवीर जी की उदारता इतनी-कहा-मुझे बता दीजिये क्या करना है, मैं वैसे ही कर दूंगा। उन्होंने कहा तुम तो आर्य समाजी हो, कैसे करोगे? बोले मैं कौन-सा श्रद्धा से करुंगा, केवल आपकी निरन्तरता की रक्षा करुंगा।

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय का आयुर्वेद महाविद्यालय भारतवर्ष में विख्यात था, जहाँ से बड़े विद्वान् आयुर्वेदाचार्य देश को मिले। जब एक्स-रे मशीन गिने-चुने स्थानों पर होती थी, तब यह सुविधा वहाँ उपलब्ध थी। धर्मवीर जी ने १९७२ में आयुर्वेदाचार्य (बी.ए.एम.एस.) की उपाधि प्राप्त की थी तथा १९७३-७४ में आयुर्वेद महाविद्यालय में अध्यापन कार्य भी किया था। जब धर्मवीर जी ने आयुर्वेदाचार्य में प्रवेश लिया तो धोती-कुर्त्ता पहनकर महाविद्यालय गये। आयुर्वेद महाविद्यालय के छात्रों ने धर्मवीर जी को कहा कि धोती पहनकर नहीं आओगे-यह आयुर्वेद कॉलेज है, कोई संस्कृत पाठशाला नहीं। तब रैगिंग भी चलन में थी। भारतीयता के कट्टर समर्थक धर्मवीर को यह कहाँ स्वीकार हो सकता था, अगले दिन कुर्त्ता-धोती पहनने के साथ-साथ खड़ाऊँ पहनकर महाविद्यालय गये तथा खट-खट की आवाज करते बरामदे से होते हुए अपने कक्षा-कक्ष तक पहुँचे। अनुमान किया जा सकता है कि कितना विरोध झेला होगा। यह विरोध तब शान्त हुआ, जब प्रतिभा के धनी, धुन के पक्के धर्मवीर आयुर्वेदाचार्य प्रथम वर्ष परीक्षा में सर्वाधिक अंकों के साथ प्रथम स्थान पर रहे।

१९७१ में धर्मवीर जी श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ, झज्जर द्वारा आयोजित आचार्य की परीक्षा देने एक गुरुकुल में आये। यह गुरुकुल विद्यापीठ का परीक्षा केन्द्र था। मैं भी छोटी कक्षा की परीक्षा दे रहा था। प्रश्न-पत्र से सम्बन्धित

पुस्तकें धर्मवीर जी के सामने रख दी गयीं, क्योंकि दूसरे छात्रों को भी उत्तीर्ण करना था, परन्तु सत्यनिष्ठ धर्मवीर ने पुस्तक का एक पृष्ठ भी नहीं खोला। स्पष्ट कह दिया कि यह उनके सिद्धान्तों के विपरीत है, तथा किसी भी परिस्थिति में वे सिद्धान्तों से समझौता नहीं कर सकते। धर्मवीर जी व्याकरणाचार्य की उस परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए तथा उन्हें स्वर्ण पदक दिया गया।

धर्मवीर जी की विद्या पुस्तकों में नहीं थी, कण्ठ में थी। उन्होंने विद्या को पढ़ने के लिये नहीं पढ़ा था, बल्कि वे विद्या से अनुराग रखते थे-प्रेम करते थे। जिसके प्रति अनुराग होता है-प्रेम होता है, उसके समक्ष संसार की समस्त बहुमूल्य वस्तुएँ तुच्छ हो जाती हैं। धर्मवीर जी के जीवन में विद्यानुराग इतना था, वे उसमें इतने डूबे हुए थे कि अन्य किसी सांसारिक वस्तु की उन्होंने कभी चाह नहीं की, हाँ, बस उपलब्ध सांसारिकता का कर्त्तव्य मानकर निवर्हन किया। हम में से बहुतों ने अष्टाध्यायी पढ़ी होगी, परन्तु धर्मवीर जी के विषय में ऐसा नहीं था। दयानन्द महाविद्यालय अजमेर में अध्यापन हेतु पैदल जाते। अजमेर के चाँदबावड़ी घर से महाविद्यालय तक अष्टाध्यायी का पाठ करते जाते। १९८५ में अजमेर पदस्थापन के दौरान मैंने कुछ अधिकारियों एवं धर्मवीर जी को रात्रिभोज के लिए आमन्त्रित किया था। श्रीमती ज्योत्स्ना जी व दोनों बेटियों के साथ आये थे धर्मवीर जी। तब भी उनके थैले में अष्टाध्यायी तथा कुछ अन्य पुस्तकें थीं। उन्हें हजारों श्लोक कण्ठस्थ थे। एक बार स्वामी ओमानन्द जी महाराज के साथ उनकी गाड़ी में कई घण्टे की यात्रा में वे लगातार श्लोक पाठ करते रहे थे, उनकी स्मृति से स्वामी जी महाराज भी विस्मित रह गये थे। वेद, दर्शन, उपनिषद्, साहित्य, चरक, सुश्रुत, व्याकरण आदि जिस विषय पर भी बोलना प्रारम्भ करते तो यह प्रतीत होने लगता कि यही इनका सबसे प्रिय विषय है। किसी एक विषय-उपविषय-सिद्धान्त पर विभिन्न पुस्तकों के प्रमाण एक साथ उपस्थित करने की कला तो सचमुच किसी दूसरे विद्वान् में नहीं देखी।

संस्कृत के प्रति इतना प्रेम कि उन्होंने अपनी पुत्रियों को संस्कृत पढ़ायी नहीं, बल्कि बाल्यकाल से ही उनके साथ संस्कृत में वार्तालाप किया। संभवत: संस्कृत में लोरी सुनने का सौभाग्य उनकी तीनों पुत्रियों को ही प्राप्त हुआ है, मुझे किसी अन्य की जानकारी नहीं। उनके निधन की अन्तिम रात्रि को अस्पताल के आई.सी.यू.वार्ड में उनकी छोटी बेटी निमिषा, श्रीमती ज्योत्स्ना जी तथा मैं जब उनसे मिलने गये तब वे स्पष्ट नहीं बोल पा रहे थे, परन्तु उन्होंने अपनी पुत्री से तब भी संस्कृत में ही बात की। मृत्युपर्यन्त उन्होंने अपने संस्कृत अनुराग को निष्ठापूर्वक निभाया। जब किसी विश्वविद्यालय आदि में संस्कृत भाषण हेतु जाते थे तो उपस्थित जनसमूह उनकी सरल, प्रभावी, सुगम व सहज संस्कृत को सुनकर झूम उठता था, क्योंकि वह केवल प्रत्यय आधारित नहीं होती थी-लम्बे-लम्बे समासों से बोझिल नहीं होती थी।

परोपकारिणी सभा के प्रति उनका केवल लगाव-जुड़ाव ही नहीं था, बल्कि सभा के प्रति उनकी अतीव श्रद्धा थी। ऋषि उद्यान की मिट्टी उनके लिये परम पवित्र थी, जिसके लिए वे कोई भी जोखिम उठाने को तैयार थे, कोई भी अपमान सहने को उद्यत थे। वे आयुर्वेदाचार्य (बी.ए.एम.एस.) थे, परन्तु परिवार को चलाने के लिए आजीविका की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अन्तत: उन्होंने संस्कृत से जुड़ा रहना श्रेयस्कर माना तथा दयानन्द कॉलेज, अजमेर में संस्कृत प्रवक्ता के पद पर कार्यरत रहे। संभवत: महर्षि दयानन्द ही उन्हें अजमेर खींच लाये थे। वे आर्यसमाज तथा ऋषि उद्यान से जुड़े रहे। दयानन्द महाविद्यालय के अधिकारियों ने उन्हें अपने उद्देश्य के लिए प्रयोग करना चाहा-उन्होंने दृढ़ता से इन्कार कर दिया। इनसे कहा गया-समझाया गया कि परोपकारिणी सभा व ऋषि उद्यान से सम्बन्ध न रखें, लेकिन उन्होंने स्पष्ट उत्तर दिया कि महाविद्यालय के समय व कार्य के अतिरिक्त शेष समय में मैं सभा का कार्य करता हूँ तथा सभा से दूर रहने का महाविद्यालय का निर्देश मुझे मान्य नहीं है। धर्मवीर जी बिना गम्भीर आरोपों के ०१.०६.१९९२ को निलम्बित कर दिये गये तथा वे छह वर्ष निलम्बित रहे। इस बीच पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वाह कैसे हुआ होगा-यह उनके समीपस्थ लोगों के लिए चिन्ता का विषय था, परन्तु उस धर्मवीर के चेहरे पर कभी चिन्ता की लकीर नहीं

देखी गयी। अजमेर इतर अधिकतर आर्यसमाजियों को तो वर्षों तक यह पता भी नहीं था कि उनके साथ इतना बड़ा अन्याय हो रहा था। वर्ष १९९८ में जिम्मेदार अधिकारी को संभवत: अपराध बोध होने पर उन्हें निलम्बन से बहाल किया गया, लेकिन उनके लम्बे निलम्बन काल की देय राशि उन्हें उनकी मृत्युपर्यन्त तो मिली नहीं थी। भगवान् देने वालों को सद्बुद्धि दें।

धर्मवीर जी गृहस्थी होते हुए भी साधु थे, धन के प्रति अत्यन्त ईमानदार थे, क्योंकि सभा को ही अपना सब कुछ समझते थे अत: सभा का एक पैसा भी व्यर्थ जाने देना उन्हें स्वीकार नहीं था, सुख सुविधाओं का उपयोग तो दूर की बात थी। चाँदबावड़ी घर से ऋषि उद्यान तक वर्षों तक वे पैदल ही आते रहे। सभा से कभी एक पैसा नहीं लिया। धर्मवीर जी अपने पूज्य गुरुदेव का अत्यधिक सम्मान करते थे, परन्तु जहाँ सभा के हित का प्रश्न होता तो असहमति में देरी नहीं करते थे। एक बार उनके गुरु महाराज सभा के प्रकाशन विभाग की कुछ पुस्तकें लेना चाहते थे, परन्तु क्रय सभा के नियमों के अनुरूप नहीं था, अत: धर्मवीर जी ने विनम्रतापूर्वक असहमति प्रकट कर दी। गुरुदेव ने धर्मवीर को खूब खरी-खोटी सुनाई, परन्तु वीर धर्मवीर विचलित नहीं हुआ। कई बार उनको अपने निर्णयों के कारण नाराजगी झेलनी पड़ती थी, परन्तु सभा का हित उनके स्वयं के हित से बड़ा था-सर्वोपरि था।

दयानन्द कॉलेज अजमेर के नियुक्ति-विवरण में एक कॉलम था (religion. Caste, race etc.) धर्म, जाति, नस्ल आदि। उसके उत्तर में धर्मवीर जी ने लिखा था- वैदिक धर्म, आर्य। एक बार उन्हें थाने जाने की नौबत आ गयी, बयान लिखने वाले ने नाम,पिता का नाम पूछकर जाति पूछी, धर्मवीर जी ने कहा- आर्य, बार-बार पूछने पर आर्य ही उत्तर आया, वही लिखना पड़ा। गुरुकुलों में एक दूसरे की जाति का ज्ञान नहीं हुआ करता था, परन्तु कार्यक्षेत्र में आने के बाद भी धर्मवीर जी की जाति का ज्ञान जन-सामान्य को नहीं था। उनकी बेटी सुवर्चा के विवाह संस्कार के समय वहाँ उपस्थित जनों को उनका गोत्र संभवत: प्रथम बार ज्ञात हुआ था, वह भी पण्डित जी ने पूछा था।

२९.१०.१९७३ को 'वैदिक चिकित्सा शास्त्र (एक विवेचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन)' विषय पर शोध के लिए उन्होंने गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में रजिस्ट्रेशन कराया था तथा शोधकार्य प्रारम्भ किया था, परन्तु आर्य समाज व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार की तीव्र इच्छा के समक्ष पीएच.डी. का कार्य अनदेखा हो गया तथा उन्होंने पुन: १९९० में उक्त उपाधि 'दयानन्द सरस्वती के जीवनी परक संस्कृत काव्यों का आलोचनात्मक अध्ययन' विषय पर पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ से प्राप्त की।

महाराष्ट्र प्रान्त, उस्मानाबाद जिला, अहमदपुर तालुक का ग्राम चाकूर आर्यों की तीर्थ स्थली है, जो वैदिक धर्म के प्रहरी डॉ. धर्मवीर जी का जन्म स्थान है। आर्यों को उनके ग्राम में उनकी स्मृति को अक्षुण्ण रखने हेतु कोई प्रकल्प लेना चाहिये। उनकी कर्मस्थली ऋषि उद्यान, अजमेर में उनसे सम्बन्धित साहित्य, सम्पादकीय आदि लेख व प्रवचन आदि की सी.डी. व सम्बन्धित वस्तुएँ एक स्थान पर संरक्षित व सुरक्षित होनी चाहिये। जिससे आर्यजनों को आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रति समर्पण की प्रेरणा प्राप्त होती रहे।

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. १४ से २१ मई, २०१७ **आर्यवीर शिविर,** सम्पर्क- ०९४६००१६५९०

२. २८ मई से ०४ जून, २०१७ **आर्य वीराङ्गना शिविर,** सम्पर्क- ०८८२३९४५९५६

३. १८ से २५ जून, २०१७- **योग-साधना शिविर,** सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेष कर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष-साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष-ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिखकर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**मन्त्री, परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

संस्था - समाचार

- लेखराम आर्य

प्रातःकालीन यज्ञोपरान्त प्रवचन के क्रम में परोपकारिणी सभा के कार्यकारी प्रधान डॉ. **सुरेन्द्र कुमार आर्य जी** ने कहा कि समाज की सोच और व्यवहार में काफी परिवर्तन आया है। पहले गाँवों और नगरों में संयुक्त परिवार होते थे। भाई-भाई, वृद्ध माता-पिता सब मिलकर रहते थे, एक साथ भोजन करते थे। लेकिन धीरे-धीरे परिवारों में विघटन हुआ। भाई, भाई से अलग हो गया। आज स्थिति यहाँ तक बिगड़ गई है कि पति-पत्नी में भी निर्वाह होना कठिन हो गया है। इस समय न्यायालयों में तलाक-सम्बन्धी लाखों अर्जियाँ विचाराधीन हैं। वैचारिक भिन्नता ही विघटन का कारण हैं। इसी प्रकार समाजों और संस्थाओं में अनेक विचारधाराओं के पनपने के कारण विघटन हो रहा है। इन सबका प्रभाव राष्ट्र की एकता और अखंडता पर भी पड़ने लगा है।

प्रातःकालीन प्रवचन में ऋग्वेद के चौथे मण्डल के चौतीसवें सूक्त के मन्त्रों की व्याख्या करते हुए **आचार्य सत्यजित् जी** ने बताया कि वेद में बुद्धिमानों, मेधावियों के गुणों का वर्णन है। बुद्धिमान सम्यक् आनन्द प्राप्त करने के लिय प्राण को धारण करते हैं। उनका खान-पान स्वास्थ्य के अनुकूल होता है, इसलिये वे दीर्घजीवी होते हैं। वे अपनी निरन्तर प्रगति, विद्या और बुद्धि को बढ़ाने के लिए यज्ञ करते हैं। जो धन प्राप्त हो गया है उसकी रक्षा करते हैं। शृष्टि के पदार्थों का उत्तम परीक्षा से संयोग और विभाग द्वारा श्रेष्ठ पदार्थों का निर्माण करके विज्ञानवान् और क्रियावान होते हैं। जन सामान्य को सुखी और साधन सम्पन्न बनाते हैं। वे बुद्धिमान् (वैज्ञानिक), विद्वानों में श्रेष्ठ और अत्यन्त धनवान् होते हैं।

प्रातःकालीन प्रवचन में **आचार्य सोमदेव जी** ने कहा कि जीवन में सुखी रहने के लिए शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक संतुलन आवश्यक है। संतुलन बिगड़ने से मनुष्य दुःखी हो जाता है। मान, अपमान, सुख, दुख, लाभ, हानि, निन्दा, स्तुति आदि से साधारण मनुष्य का संतुलन बिगड़ जाता है। महापुरुषों का जीवन और उनका व्यवहार संतुलित होता है। वे स्वयं को संतुलित रखते हैं और दूसरों को संतुलित करने का प्रयास करते हैं। संसार में यथायोग्य व्यवहार से संतुलन बना रहता है। व्यक्ति के बैठने, बोलने, चलने में संतुलन होना चाहिये। संतुलन बिगड़ने से भद्रता चली जाती है। जिसमें संतुलन होता है, वह अच्छा दिखाई देता है।जो बाहर से संतुलन दिखाते हैं वे भीतर से असंतुलित होते हैं। विचारहीन मनुष्यों का संतुलन बहुत शीघ्र बिगड़ जाता है।

माता रश्मि जी ने कहा कि संसार के सभी मनुष्य व अन्य प्राणी सदा सुखी रहना चाहते हैं, किन्तु दुख मिलता है। ईश्वर भक्ति से ही मनुष्य सदा सुखी रह सकता है। जैसे खेत में फसलों की हानि करने वाले पशुओं को बाँधना पड़ता है वैसे ही ज्ञान और कर्म इन्द्रियों को उनके विषयों में अत्यधिक रमण करने से रोकना आवश्यक है।

बलिदान दिवस सम्पन्न :- २३ मार्च को बलिदान दिवस मनाया गया। इसी दिन भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी की सजा हुई थी। इस अवसर पर **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि अंग्रेजी शासन काल में अपमान, अन्याय, अत्याचार मिटाने और स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए क्रान्तिकारियों ने अपना बलिदान दिया। वर्तमान में स्वदेशी शासन व्यवस्था है किन्तु अनेक समस्यायें पूर्ववत् बनी हुई है। कानून व्यवस्था पूरी तरह ठीक नहीं है। जो स्वप्न क्रान्तिकारियों ने देखा था वह अभी पूरा नहीं हुआ है। जिन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये उन्होंने बलिदान दिया वे उद्देश्य अधूरे हैं। **ब्र. भूदेव जी** ने कहा कि आज के दिन हमें क्रान्तिकारियों का अनुसरण करते हुए वर्तमान में राष्ट्र की समस्याओं का वैदिक रीति से समाधान करने के लिये संकल्प लेना चाहिये। **श्री नरेश जी** ने कहा कि भगत सिंह का पूरा परिवार आर्यसमाज से जुड़ा हुआ था, इसलिये बचपन से ही देशभक्ति के संस्कार उन्हें प्राप्त हुए। उन्होंने महान् देशभक्त लाला लाजपतराय की हत्या

का बदला लेने के लिए अंग्रेज अधिकारी साण्डर्स को मारा। **बहिन रेणु जी** ने कवि प्रदीप जी द्वारा रचित और गाया हुआ गीत सुनाया- 'आज के इन्सान को क्या हो गया...' **ब्र. शिवनाथ** जी ने कहा कि २३ मार्च २०१४ को पतंजलि योगपीठ और स्वामी रामदेव जी के प्रयास से सरकारी दस्तावेजों में स्वतन्त्रता संग्राम के बलिदानियों को क्रान्तिकारी का दर्जा प्राप्त हुआ। इससे पहले काँग्रेस के शासन काल तक उन्हें आतंकवादी के रूप में प्रस्तुत किया जाता था। शहीद भगत सिंह ने अपनी माँ को जो पत्र लिखा था, उसे कविता में सुनाया। **ब्र. मनोज जी ने** कहा कि बलिदान दिवस मनाने का मुख्य प्रयोजन उन क्रान्तिकारियों के द्वारा राष्ट्र के लिये किये गये उपकारों को याद करना और उनके अधूरे कार्यों को पूरा करना है। उनके कार्यों को पूरा करना हम सबका दायित्व है। अगली पीढ़ी को अन्याय, अत्याचार, अभाव को दूर करने के लिये जागरुक बनाना हमारा कर्तव्य है। **ब्र. योगेन्द्र जी ने** कहा कि युवाओं को गलत रास्ते में भटकने से बचाकर देशसेवा में लगाना है। उन्हें अपने पूर्वजों के इतिहास तथा देश की संस्कृति से परिचित करवाना आवश्यक है। **ब्र. रोशन जी** और **बहन सीमा जी** ने देशभक्ति गीत सुनाया। **ब्र. लोकेश जी ने** कार्यक्रम का संचालन किया।

रविवारीय सत्संग में **ब्र. रविशंकर जी** और **ब्र. प्रशान्त** जी ने भजन सुनाया।

शोक समाचार- परोपकारिणी सभा के कोषाध्यक्ष माननीय सुभाष नवाल जी के पिता **श्री मथुराप्रसाद नवाल जी** का १७ मार्च को निधन हो गया। १८ मार्च को अन्त्येष्टि संस्कार तथा १९ मार्च को ऋषि उद्यान में शांति यज्ञ सम्पन्न हुआ। वे कई वर्षों से ऋषि उद्यान से जुड़े हुए थे। ऋषि उद्यान स्थित यज्ञशाला के जीर्णोद्धार एवं भवनों के निर्माण में उनका सात्विक सहयोग रहा। परोपकारिणी सभा के सदस्य माननीय **श्री सत्येन्द्र सिंह जी आर्य** का २९ मार्च को बेंगलोर में निधन हो गया। ३० मार्च सायंकाल ऋषि उद्यान में श्रद्धांजलि सभा हुई। वे पिछले ६-७ महीने से बीमार थे। ऋषि उद्यान में साधना करते हुए वे अपने ज्ञान और अनुभवों से प्रवचन द्वारा सभी आश्रमवासियों को लाभान्वित करते रहते थे। उन्होंने आर्य समाज एवं वैदिक संस्थाओं में समय-समय पर अपनी सेवाएं दी। पत्र-पत्रिकाओं में उनके समसामयिक लेख प्रकाशित होते थे। कुछ समय तक वैदिक पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। परोपकारिणी सभा, ऋषि उद्यान और गुरुकुल की ओर से दिवंगत आत्माओं के सद्गति हेतु ईश्वर से प्रार्थना करते हुए हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

*** आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम:-**

सम्पन्न कार्यक्रम:-

(क) १-२ अप्रैल २०१७: खेड़ा अफगान आर्यसमाज सहारनपुर।

(ख) ३-९ अप्रैल २०१७: वानप्रस्थाश्रम, रोजड़।

आगामी कार्यक्रम:-

(क) १७-२३ अप्रैल २०१७: आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-१, नई दिल्ली।

*** आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम:-**

सम्पन्न कार्यक्रम:-

(क) ९,१०,११ मार्च २०१७ को सामवेद पारायण यज्ञ, नितिन आर्य सुपुत्र श्री रणधीर जी आर्य के घर पर, ग्राम-साखना कलाँ, जिला-सहारनपुर (उ.प्र.), वेदपाठी-ब्र. सत्यवीर आर्य व वेदप्रिय आर्य।

(ख) होलिका उत्सव पर विशाल यज्ञ, आर्यसमाज बढ़ेडी (नागल), सहयोगी- ब्र. लक्ष्यवीर आर्य, सत्यवीर आर्य एवं समस्त ग्रामवासी।

(ग) २६ मार्च २०१७ को श्री योगेश आर्य के सुपुत्र का नामकरण संस्कार, ग्राम- चन्दैना, सहारनपुर (उ.प्र.)।

(घ) ९ अप्रैल को श्री विवेक आर्य की पुत्री का अन्नप्राशन संस्कार, ग्राम- चन्दैना, सहारनपुर (उ.प्र.)।

***स्वामी सोमानन्द जी द्वारा प्रचार -**

(क) २८ मार्च २०१७ को आर्यसमाज साम्भर में वैदिक नववर्ष व समरसता महायज्ञ कार्यक्रम के अध्यक्ष।

(ख) २९ मार्च को आर्यसमाज, अजमेर के १४३ वाँ स्थापना दिवस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि।

(ग) १, २ अप्रैल को सिणगार में यज्ञ व सत्संग।

प्रकाशस्वरूप अग्नि सबका रक्षक, पालक व पूज्य है।

-डॉ. कृष्णपाल सिंह

तनूपाऽअग्नेऽसि तन्वं मे पाह्यायुर्दाऽअग्नेऽस्यायुर्मे देहि वर्च्चोदाऽअग्नेऽसि वर्च्चो में देहि। अग्ने यन्मे तन्वाऽऊनं तन्मऽआपृण।।

-यजु. ३/१७

इस मन्त्र का ऋषि अवत्सार है और देवता अग्नि है। इस मन्त्र में श्लेषालंकार होने से ऋषि ने दो अग्नियों का व्याखान किया है। एक ईश्वराग्नि दूसरी भौतिकाग्नि। ये दोनों प्रकार की अग्नियाँ क्या करती हैं, इस विषय का उपदेश है। प्रथम अग्निस्वरूप परमेश्वर जगतस्थ सब मूर्तिमान् और अमूर्तिमान् पदार्थों की रचना करता है अथवा स्थूल-सूक्ष्म जगत् का रचन और रक्षणादि सब कुछ यथावत् करता है वही ईश्वर मेरे शरीर की रक्षा करता है। सर्वविद्यामय जगदीश्वर! आप ही सब प्रकार के ज्ञान-विज्ञान प्रदाता हैं अत:एव मुझे भी पूर्णविद्या विज्ञानादि प्रदान कीजिए।

भौतिक अग्नि आयु आदि का निमित्त है। समस्त शरीरों के पालन का हेतु है। आत्मयुक्त शरीरादि संचालन भी इस अग्नि के बिना सम्भव नहीं है। जब तक शरीर में अग्नि (ताप, ऊष्मा) बना रहता है, तब तक शरीर यथावत् कार्य करता रहता है। इस ताप में किसी कारण न्यूनाधिक्य हो जाने से शरीर रोगयुक्त हो जाता है। यदि शरीर में ताप अधिक हो जाय तो भी शरीरावयव उचित रूप से कार्य करने में समर्थ नहीं होते। इसलिये शरीर में विशिष्ट ताप बना रहने पर सब कार्य यथावत् होते रहते हैं। अत: यह भौतिक अग्नि भी सबकी रक्षा का निमित्त है। जैसा कि उपनिषद् में कहा गया है कि-

अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टोरूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव। एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च।।

जैसे अग्नि विद्युत्‌रूप से सब स्थूल पदार्थों में व्याप्त भी उस वस्तु के रूप से भिन्न नहीं दिखता, किन्तु उस पदार्थ के रूप से ही उस में स्थित अतिसूक्ष्म होने से उससे पृथक् नहीं जाना जाता, वैसे ही परमात्मा भी सब कार्य-कारण वस्तुओं में व्याप्त अतिसूक्ष्म होने से नहीं दिखता, किन्तु उस-उस पदार्थ के रूप से उस-उस में अवस्थित है और जहाँ पदार्थ नहीं वहाँ भी आकाशवत् अनन्त होने से परमात्मा व्याप्त है। अत: दोनों अग्नियाँ पदार्थों में व्याप्त होकर उनकी रक्षादि करती है।

महर्षि दयानन्दकृत मन्त्रार्थ:- हे (अग्ने) सबके रक्षक जगदीश्वर! (यत्) क्योंकि आप (तनूपा:) सब पदार्थों के शरीरों की रक्षा करने वाले (असि) हो, (तत्) इसलिये (मे) मेरे (तन्वम्) शरीर की (पाहि) रक्षा करो। हे (अग्ने) जगदीश्वर! (यत्) क्योंकि आप (आयुर्दा:) आयु प्रदान करने वाले (असि) हो, (तत्) इसलिये (मे) मुझे (आयु) पूर्ण आयु एवं जीवन (देहि) प्रदान कीजिए। हे (अग्ने) सर्वविद्यामय ईश्वर! (यत्) क्योंकि आप (वर्च्चोदा:) विज्ञान के देने वाले (असि) हैं, (तत्) इसलिये (मे) मुझे (वर्च:) पूर्णविद्या (देहि) प्रदान कीजिये। हे (अग्ने) कामनाओं को पूर्ण करने वाले ईश्वर (मे) मेरे (तन्वा:) अन्त:करण नामक शरीर में (यत्) उस सबको (आपृण) चहुँ ओर से पूरा करो। यह मन्त्र का ईश्वरपरक अर्थ है।

भौतिक अग्निपरक अर्थ:- यह (अग्ने) रक्षा का निमित्त भौतिक अग्नि (यत्) जिससे (तनूपा:) सब पदार्थों के शरीर की पालना का निमित (असि) है, (तत्) इसलिये (मे) मेरी (तन्वम्) जठर रूपी शरीर की रक्षा कीजिए। (यत्)क्योंकि यह (अग्ने) भौतिक अग्नि (आयुर्दा:) आयु का निमित्त (असि) है (तत्) इसलिये (मे) मुझे (आयु:) आयु प्रदान कीजिए। (यत्) क्योंकि यह (अग्ने) अग्नि (वर्च्चोद:) विज्ञान प्राप्ति का निमित्त (असि) है, (तत्) इसलिये (मे) मुझे (वर्च:) दीप्ति प्रदान कीजिये। यह (अग्ने) कामनापूर्ति का निमित्त भौतिक अग्नि (यत्) जितनी (मम) मेरे (तन्वा:)बाह्य शरीर में (ऊनम्) कमी है (तत्) उसे (आपृण) चहुँ ओर से पूर्ण करता है।

महर्षिकृत भावार्थ:- 'परमेश्वर ने इस जगत् में जिससे सब प्राणियों के लिये शरीर, आयु का निमित्त विद्या प्रकाश एवं सर्वाङ्ग पूर्ति को रचा है, इसलिये सब पदार्थ अपने स्वरूप को धारण कर रहे हैं। वैसे ही इस परमेश्वर की सृष्टि में प्रकाश आदि गुणों वाला होने से यह अग्नि इनका मुख्य साधक है, ऐसा सबको जानना चाहिये।'

आर्याभिविनय व्याख्या:- इस मन्त्र की व्याख्या महर्षि ने आर्याभिविनय में निम्न प्रकार से की है-'हे **सर्वरक्षकेश्वराग्ने!** तू हमारे शरीर का रक्षक है। सो शरीर को कृपा से पालन कर। हे महावैद्य! आप आयु (उम्र) बढ़ाने वाले हो, मुझको सुखरूप उत्तम आयु दीजिए। हे अनन्त **विद्यातेजयुक्त!** आप 'वर्च:' विद्यादि तेज यथार्थ विज्ञान देने वाले हो, मुझको सर्वोत्कृष्ट विद्यादि तेज देओ। पूर्वोक्त शरीर की रक्षा से हमको सदा आनन्द रखो और जो-जो कुछ भी शरीरादि में 'ऊनम्' न्यून हो, उसको कृपा दृष्टि से सुख और ऐश्वर्य के साथ सब प्रकार से आप पूर्ण करो। किसी आनन्द वा श्रेष्ठ पदार्थ की न्यूनता हमको न रहे। आपके पुत्र हम लोग जब पूर्णानन्द में रहेंगे, तभी आप पिता की शोभा है। क्योंकि लड़के लोग छोटी वा बड़ी चीज अथवा सुख पिता माता को छोड़ किससे मांगेंगे? सो आप सर्वशक्तिमान् हमारे पिता सब ऐश्वर्य तथा सुख देने वालों में पूर्ण हो।'

अग्नि शब्द से ईश्वर दर्शन:- हे सर्वरक्षक ईश्वर आप सब पदार्थों के शरीरों की रक्षा करते हैं। इसलिये मेरे शरीर की रक्षा कीजिए और आप हमें पूर्ण आयु पदान कीजिये। ईश्वर विज्ञान प्रदाता है, हमें भी पूर्ण विद्या-विज्ञान से युक्त कीजिये। ईश्वर! मेरे अन्त:करण में बुद्धि, बल, शौर्य आदि की न्यूनता हो तो उसे सब प्रकार से पूर्ण कीजिये। ईश्वर हमारे शरीर का रक्षक, आयु-प्रदाता, विद्या-प्रकाशक और न्यूनतापूरक है।

अग्नि शब्द से भौतिक अग्नि दर्शन:- यह भौतिक अग्नि शरीर की रक्षा का हेतु है, जठराग्नि के रूप में शरीर की रक्षा करता है। वह आयु का निमित्त है, विज्ञान की सहायता से दीप्ति प्रदान करता है। यह कामनाओं का पूरक है अत: बाह्य शरीर की न्यूनताओं को पूर्ण करता है। शरीर के रक्षादि कार्यों में यह भौतिक अग्नि मुख्य साधन है।

आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में स्थिर-निधि

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने परोपकारिणी सभा की स्थापना करते समय तीन उद्देश्य रखे थे-

१. वेद और वेदांगादि शास्त्रों के प्रचार अर्थात् उनकी व्याख्या करने-कराने, पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने, छापने-छपवाने आदि में, २. वेदोक्त-धर्म के उपदेश और शिक्षा अर्थात् उपदेशक-मण्डली नियत करके देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में भेजकर सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग कराने आदि में ३. आर्यावर्तीय अनाथ और दीन मनुष्यों के संरक्षण, पोषण और सुशिक्षा में व्यय करें और करावें।

इन कार्यों को करने के लिये सभा का वर्तमान मासिक व्यय लगभग १२ लाख रुपये है, जो कि आर्यजनों के दान पर ही निर्भर है। परोपकारिणी सभा के कार्यकारिणी अधिवेशन सं. २२९ एवं साधारण अधिवेशन सं. १२० के प्रस्ताव १३ में आचार्य धर्मवीर जी द्वारा प्रारम्भ किये गये बृहत् प्रकल्पों (प्रकाशन, प्रचार, अध्यापन आदि) के लिये आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में एक करोड़ रुपये की स्थिर-निधि बनाने का संकल्प लिया गया है। आर्यजनों से निवेदन है कि इस पुनीत कार्य में अपना अधिक से अधिक सहयोग प्रदान कर आचार्य जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें।

आप अपना दान चैक, ड्राफ्ट या सभा के खाते में सीधे भी भेज सकते हैं। कृपया, राशि भेजने के पश्चात् सभा में दूरभाष या पत्र द्वारा अवश्य सूचित कर दें।

- मन्त्री

आवश्यक-सूचना

परोपकारिणी सभा की रसीद-बुक (रसीद संख्या ४५५१ से ४६०० तक) ऋषि मेले के समय खो गई है, जिसमें संख्या ४५५१ से ४५८८ तक की रसीदें कटी हुई हैं। इन संख्याओं की रसीदें जिन भी महानुभावों के नाम से काटी गई हों वे कृपया अपनी रसीद की एक फोटो कॉपी सभा के पते पर अवश्य भेज देवें।

- मन्त्री

संभाग स्तरीय आर्यवीर व आर्य वीरांगना शिविर

युवक व युवतियों के संस्कार निर्माण का सुनहरा अवसर

आर्यवीर दल जिला अजमेर का

जिला स्तरीय जूडो-कराटे, आसन-प्राणायाम, व्यायाम प्रशिक्षण एवं संस्कार शिविर

छात्रों हेतु दिनांक 14 मई से 21 मई 2017 तक तथा

छात्राओं हेतु दिनांक 28 मई से 04 जून 2017 तक

स्थान : ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

आयोजक

परोपकारिणी सभा, अजमेर एवं आर्यवीर दल, राजस्थान (अजमेर सम्भाग)

शिविर में प्रवेश हेतु आवश्यक नियम

* **पंजीयन शुल्क** 500/- रु. देना अनिवार्य है।
* **शिविरार्थियों** के आवास,भोजन की व्यवस्था, परोपकारिणी सभा द्वारा रहेगी।
* **शिविरार्थी** की आयु कम-से-कम 13 वर्ष से कॉलेज स्तर तक हो तथा वह पूर्ण रूप से स्वस्थ होना/होनी चाहिये।
* **शिविरार्थी** अपने साथ सफेद टी-शर्ट, नीला लोअर, सफेद पी.टी. शूज, सफेद मोजे, मौसम के अनुकूल पहनने के कपड़े, दो नए फोटो, पैन, टार्च, तेल व साबुन इत्यादि अनिवार्य रूप से लावें।
* प्रत्येक शिविरार्थी को शिविर की दिनचर्या व अनुशासन का पालन करना होगा। अनुशासनहीनता करने पर शिविर से पृथक् कर दिया जायेगा।

आवश्यक निवेदन एवं अपील

इस विशाल शिविर के प्रबन्धन, भोजन, आवास, विज्ञापन, मार्गव्यय, मानदेय आदि पर पर्याप्त व्यय **होगा। अतः आप** सभी दानी महानुभावों एवं आर्यसमाजों से **निवेदन है कि अपनी सहायता राशि नकद/चैक/ड्राफ्ट आदि परोपकारिणी सभा, अजमेर-305001 के पते पर भेजने की कृपा करें।**

विशेष: भामाशाह दानी महानुभाव एक दिन का अथवा एक समय का भोजन, नाश्ता, घी, आटा, गेहूँ, चावल, **चीनी**, तेल, दाल, दूध आदि देकर भी सहयोग कर सकते हैं।

सम्पर्क सूत्र

डॉ. विश्वास पारीक-09460016590, श्रीमती रीना चौधरी-08823945956,

श्री वासुदेव आर्य-9460112092, ऋषि उद्यान - फोन : 0145-2621270

शराब और मूर्तिपूजा

-पं. आर्य प्रहलाद गिरि
(मुख्य पुजारी : निंगेश्वर मठ, निंगा, आसनसोल)

प्याला भरा तो है फिर भी, 'पी पायेंगे?' का ज्ञान कहाँ हमको।
है बना तमाशा भेजा वह, दुनिया में कितना हमको।
कहने वाले तो कहते कि हैं हम हर कर्मों में स्वतन्त्र,
पर, हमारी परवशता का न ज्ञान उन्हें जितना हमको।।
यह भी सुना उस पार प्रिये, ये साधन भी छिन जायेंगे।
वहाँ अभागे नर का तब अधिकार न जाने क्या होगा।
इस पार प्रिये, मधु है, तुम हो, उस पार न जाने क्या होगा।।

दिनकर के 'कुरुक्षेत्र' में दो वृद्ध (भीष्म-युधिष्ठिर) जैसे उबाऊ संवाद के बजाय प्रेमी-प्रेमिका-प्रेमालाप के ही माध्यम से आत्मा, परमात्मा और प्रकृति तथा इस पार (लोक-जीवन) उस पार (मृत्योपरांत, परलोक, मुक्ति) और कर्म-फलों के बारे में उपरोक्त दार्शनिक -छायावादी कविता में हमारे वेदों के त्रैतवाद का संदेश देने वाले कविवर हरिवंश राय बच्चन जी की सुमधुर-मधुशाला जब छपी, तो मद्यप लोग इतने मुग्ध हो गये, मानो उन्हें मद्यपान की संवैधानिक-साहित्यिक छूट मिल गयी हो। ''बैर बढ़ाते मन्दिर-मस्जिद, मेल कराती मधुशाला'' का ही कीर्तन कर-कर के ये मदिरा को माथे पर नचाने लगे। जबकि शराब को प्रतीक बनाकर सिर्फ ईश्वर-भक्ति (जहाँ कोई विभक्तियाँ-भेदभाव न हो) के साहित्यिक-नशे का ही प्रचार करने वाले एवं कायस्थ होकर भी खुद कभी शराब न पीने वाले बच्चन जी को खुलकर कहना ही पड़ा-

''मैं कायस्थ कुलोद्भव, मेरे पुरखों ने इतना ढाला।
मेरे भी तन के है लहू में अब भी सत्तर प्रतिशत हाला।।''
''पाठकगण हैं पीने वाले, पुस्तक ही है मेरी मधुशाला।।''

मतलब कि शराब का नशा (लत, असर) जल्द नहीं उतरता। मेरे पिता-पितामह ने यदि लाचारी या मूर्खतावश कभी शराब या मूर्तिपूजा को अपना भी लिया हो तो, अब हमें उसे ही अपनी सांस्कृतिक-धरोहर और जन्मसिद्ध अधिकार-पहचान बताते हुए, बंदरियों-सा मरे हुए बच्चे को भी गोद में चिपकाये फिरने में गर्व नहीं मानना चाहिये।

संसार की सबसे रोचक और भयंकर वस्तु भी शराब ही है। ऐसा इसलिये भी कि जो एक बार भी शराब को अपना ले, उसे पहले के सारे प्रियजन (माँ, पिता, पत्नी, पुत्र, भाई, मित्र, धन, सम्मानादि) भी तुच्छ लगने लगते हैं, फिर वह चाह कर भी शराब को नहीं छोड़ पाता है, शराब का ही गुलाम बनकर रह जाता है। शराब भयंकर भी इतनी है कि ये स्वर्ग जैसे सुंदर घर-परिवार में एक बार भी घुसी कि उस घर को रिश्तेदारों सहित ईंट से ईंट बजवा कर-धन-जन-इज्जत लुटवाकर ही हटती है। इसीलिये कहा जाता है कि शत्रु को मिटाना हो तो उसके घर में गोली-बम नहीं, किसी भी माध्यम से शराब ही भिजवा दो। वह स्वत: ही बर्बाद होकर तेरे आगे गिर जायेगा।

'दवा-दारू' कहा तो जाता है, किन्तु इसका प्रयोग ठगी, घूसखोरी, हत्या, लूट, बलात्कार आदि सारे अवैध कर्मों को करने-करवाने में ही सर्वत्र किया जाता है। मेरे मन्दिर के सैप्टिक टंकी की सफाई हेतु मेहतर ने जब मुझसे ३०० रु. के बजाय सिर्फ एक बोतल शराब का दाम- ५०रु. ही माँगा, तो मैं हैरानी से बोला-'मैं शराब पीने हेतु एक रुपया भी नहीं दूँगा, किन्तु दूध पीने के नाम पर मैं ३०० रु. भी सहर्ष दे सकता हूँ।' तब वह बोला- 'बाबाजी, दूध पीकर नहीं, शराब पीकर ही ये सब गंदे काम किये जाते हैं।'

इसी तरह संसार के पहले विश्व-युद्ध 'महाभारत-संकट' के बाद हमारा महान् देश भारतवर्ष-आर्यावर्त भी जब अंधकार-युग में सो गया, तो पुरोहितों से लेकर वाममार्गियों तक-सभी धर्म के नाम पर जनता के तन-मन और धन को लूटने लगे। इन अपकर्मों से व्याकुल जनता को महात्मा बुद्ध की शरण काफी सुख-शांतिप्रद लगी। किन्तु बौद्धगण भी बेबीलोनियों की देखा-देखी अपने जैन-बुद्ध को ही भगवान् मानकर इन्हीं की मूर्तियाँ बनवा-पूजवा कर वेद-पथ को समूल मिटवा देने पर ही उतारू हो गये। सनातन धर्म के पुरोहितों-ठेकेदारों के पुश्तैनी आमदनी और धार्मिक-ग्राहक लोग बह न जायें, इसीलिये बौद्धों-जैनियों की देखा देखी ये पौराणिक-पुरोहित लोग भी विविध पुराणों को लिख-लिखकर शिव, विष्णु, सूर्य, शक्ति, राम, कृष्ण, हनुमान आदि की खूबसूरत विचित्र

अलंकृत मूर्तियाँ बना-बनाकर पूजने-पुजवाने लगे। शंख, घंटा, घंटी, ढोल, डमरू, झाँझ, मंजीरों, व पंचाधिक दीपकों से इनके संध्या आरती और भजन-पूजन-प्रसाद वितरण इतने सुंदर-मधुर-नृत्य संगीतमय आकर्षक होने लगे कि खुद जैन-बौद्ध भी अपने-अपने नये मन्दिरों को छोड़कर पुराने सनातनी समाज में ही लौटने लगे। इन तिकड़मों से हिन्दू धर्म उस समय तो बच गया, किन्तु मूर्ति-पूजन के धर्मान्ध नशे से जो-जो सामाजिक और नैतिक पतन-विघटन होता है, वह और तेज होता चला गया। इसीलिये चाणक्य और सर्वपल्ली राधाकृष्णन् भी मूर्ति-पूजा को मूर्खता और अधम लिखे हैं।

वेद की तरह कुरान के भी निराकारेश्वर का तो मैं समर्थक हूँ, किन्तु ईश्वर को खिलौना और ईश्वरोपासना को तमाशा बना देने वाले मूर्तिपूजकों के प्रति क्रूरता से पेश आने को मैं सहमत नहीं हो सकता। चूंकि मूर्तिपूजा भी एक धार्मिक नशा ही है। इसीलिये मनु, वाल्मीकि, व्यास, चाणक्य, (शंकराचार्य), पतंजलि, कबीर, नानक, गुरु गोविन्दसिंह, दादू, मलूकदास, तुकाराम, समर्थ रामदास, ज्ञानेश्वर, तमिलाचार्य, राजाराममोहनराय, दयानन्द जैसे संतों-युगपुरुषों के बार-बार चिल्लाते रहने पर भी बुद्धोपरान्त भारत ने मूर्तिपूजा के नशे में लुटते-घुटते, टूटते-मिटते रहना ही पसंद किया और आज भी मूर्तिपूजा का जाम पर जाम बेशर्मी से पीते ही जा रहा है।

सामान्यत: शराबी माने जाने वाले ईसाई लोगों ने तो अपने क्रांतिकारी पुजारी मार्टिन लूथर किंग के कहने में आकर मूर्तिपूजा को सहर्षादर छोड़ दिया, किन्तु हम हिन्दू लोगों ने मूर्तिपूजा पर अंगुली उठाने वाले अपने अद्‌भुत अभिभावक-महर्षि दयानन्द को ही विष पिलाकर मार दिया। फिर भी मूर्तिपूजा के नशे में दयानन्द के बिना अनाथ हो जाने का किसी को गम नहीं सता रहा। वरना, मूर्तिपूजा के पीछे हमारे देश का अनगिनत समय और संपत्ति प्रतिवर्ष यूँ बर्बाद न हो रहे होते। इसी शक्ति को हम विधर्मियों से भी ज्यादा धर्मप्रचार की सफलता में लगाते।

बिना जोर जबरदस्ती किये शराब के नशे को स्वैच्छिक-सद्‌बुद्धि से शायद ही कोई छोड़ पाता है, वरना बिहार में नितीश जी को कठोर कानून नहीं बनाने पड़ते। इसी तरह मुहम्मद साहब भी यदि मूर्तिपूजा के धर्मान्ध नशेड़ियों के खिलाफ कड़े कदम न उठाते तो अरब से भी मूर्तिपूजा नहीं मिटती।

'न तस्य प्रतिमा अस्ति' (यजु.-३२.३) के आलवा ऋग्वेद (८.२.१२) में भी लिखा है-'शराब पीकर पास-पड़ोस को सताने वाले उद्दंड-अभद्र-दुष्ट-बुद्धिहीनों को परास्त करने हेतु मैं बुद्धि-पुष्टिवर्धक-सोमरस को पीने वाला बनूँ।' जैसे दुराग्रही लोग मूर्तिपूजा को ही ईश्वरोपासना का बहाना बना रहे हैं, उसी तरह आर्य देवों-विद्वानों के प्रिय पेय सोमरस को भी आज के शराबी लोग मद्य ही बताते हैं, जबकि सुश्रुत व ऋग्वेद (१०.८५.३) के अनुसार ज्ञानान्वेषक-ऋषियों-वैज्ञानिकों के लिये बने सोमलता में पूर्णिमा आते-आते पंद्रहों पत्तियाँ भर जाती हैं और अमावस्या आते-आते सब झर जाती हैं।

छांदोग्योपनिषद् (५.११) में राजा अश्वपति सनम्र-गर्व से कहते हैं-'मेरे राज्य में न तो कोई अनपढ़-अज्ञानी है, न जुआरी है, न शराबी है, न कजूंस है, न व्यभिचारी है, न तो कोई यज्ञहीन नास्तिक ही रहता है।' यदि ये भी वर्तमान गीता की तरह बुद्धकाल के बाद का ग्रन्थ होता तो यह भी लिखा होता कि मेरे राज्य में कोई मूर्तिपूजक भी नहीं रहता है, क्योंकि मूर्ति को ईश्वर कहकर पूजना नास्तिकता ही नहीं, ईश्वरापमान भी है।

मैं किसी चित्र या मूर्ति की कलाकृति का उपेक्षक (निंदक) नहीं हूँ। जैसे तिरंगा झंडा, भारतमाता का चित्र, राणाप्रताप, शिवाजी, नेताजी, भगतसिंहादि की प्रेरक प्रतीकों-मूर्तियों का जो सम्मान करता हूँ, उसी तरह अमरनाथ, कैलाश मानसरोवर, रामेश्वर, गंगा-ब्रह्मपुत्र आदि राष्ट्रीय-प्रतीकों के प्रति प्राण देकर भी सश्रद्धा-सुरक्षा-सम्मान करता हूँ, किन्तु सर्वज्ञ सर्वव्यापी ईश्वर को मूर्ति के अंदर सीमित मानने की नास्तिकता मैं नहीं करता।

मैं अंधभक्ति के नशे में बेसुध अपने प्रबुद्ध हिन्दू भाइयों से निवेदन करता हूँ कि शत्रु के पास भी एकेश्वरोपासना का सद्‌गुण हो तो अपना लेना और स्वमित्र के भी मूर्तिपूजा के दुर्गुण को न अपनाना ही बुद्धिमानी है। वेद की सच्ची बातों को निर्भीकता से सुना-सुनाकर अपने आर्य (हिन्दू) धर्म की सदा सुरक्षा-समृद्धि चाहने वाले आर्यसमाज के 'जातिवाद-मुहूर्तवाद बहुदेव-मूर्तिपूजा विरोधी आन्दोलन' में आज यदि हम सब शामिल न हुए तो कल हमें मूर्तिभंजक-कुरानी या शराबी चर्चों के चपेट में चले जाने से भगवान् भी नहीं बचा सकेंगे। जैसे शराबियों के चंगुल में चली गयी अपनी प्यारी द्वारका नगरी को डूबने से स्वयं श्री कृष्ण भी नहीं बचा पाये थे।

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एकमात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं** दैनिक यज्ञ*– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। *गुरुकुल*– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्णरूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोधकर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों में भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता
(१६ से ३१ मार्च २०१७ तक)

१. श्रीमती विमला तिवारी, अजमेर २. श्रीमती सुषमा आर्या, पानीपत ३. मेहता माता जी, अजमेर ४. श्री लक्ष्मण आर्य मुनि, लखनऊ ५. श्री नरेश कुमार व श्रीमती सुदेश, करनाल ६. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर ७. श्री लाभचन्द आर्य, हनुमानगढ़ ८. श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, यमुनानगर ९. श्री शेरसिंह आर्य, यमुनानगर १०. श्री अनिलकुमार सिंघल, नई दिल्ली ११. श्री वरदीचन्द गुप्त, जयपुर १२. डॉ. विमला देवी, बीड़ १३. श्री अशोक गोयल, अजमेर १४. कुमारी प्रिया शर्मा, अजमेर १५. श्री विजय सिंह गहलोत व श्रीमती कंचन गहलोत, अजमेर १६. श्री सुरेश आनन्द व श्रीमती सरिता आनन्द, नई दिल्ली १७. श्रीमती अलका कौशिक, गुरुग्राम १८. श्री छाजूराम कोकचा, जयपुर १९. श्री अमित शर्मा, दिल्ली २०. श्री आनन्द सिंह आर्य, करनाल २१. श्री सीताराम, अजमेर २२. श्री ए.के. शर्मा, महू २३. श्री प्रवीण आर्य, दिल्ली २४. श्री भगवती प्रसाद राठी, अजमेर २५. श्री वाल्मीकि पटनायक, भुवनेश्वर २६. श्रीमती उषा पथी, गंजाम २७. कर्नल सुधीर साहनी, नासिक २८. श्री राम, अजमेर २९. श्रीमती किरण कुलश्रेष्ठ, जोधपुर ३०. श्री कैलाशनाथ गुप्ता, जोधपुर ३१. श्री प्रभुलाल मीणा, जयपुर ३२. स्वस्तिकाम: चैरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महा. ३३. आर्यसमाज साकेत, नई दिल्ली ३४. श्री अवनीश कपूर, नई दिल्ली ३५. श्री एस.एस. गोयल लुधियाना ३६. श्रीमती स्नेहलता, अम्बाला सिटी ३७. श्री लक्ष्मण प्रसाद वानप्रस्थ, लखनऊ ३८. श्री आर.के.रावत, अहमदाबाद ३९. माता कौशल्या, बीकानेर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता
(१६ से ३१ मार्च २०१७ तक)

१. श्री यजस गुप्ता, नई दिल्ली २. श्रीमती सुषमा आर्या, पानीपत ३. श्री लक्ष्मण आर्य मुनि, लखनऊ ४. श्री नरेश कुमार व श्रीमती सुदेश, करनाल ५. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर ६. श्री वासुदेव, बनास डीसा ७. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर ८. श्रीमती कान्ता अग्रवाल, अजमेर ९. श्री मनोज गुप्ता, कोलकाता १०. श्री आशीषनाथ गुप्ता, गाजियाबाद ११. श्री विजयसिंह गहलोत व श्रीमती कंचन गहलोत, अजमेर १२. श्री नीरज जसनानी, आगरा १३. स्व. श्रीमती लक्ष्मी देवी कटारिया, अजमेर १४. श्रीमती राजकुमारी कटारिया, अजमेर १५. श्री कमलेश पुरोहित, अजमेर १६. श्री रिषभ गुप्ता, अम्बाला केन्ट १७. श्री कृष्ण कुमार साहू, बिलासपुर १८. श्री मूलचन्द गुप्ता, नई दिल्ली १९. श्री श्याम सुन्दर आर्य, उन्नाव २०. श्री राहुल कुमार, सहारनपुर २१. श्री ए.के. शर्मा, इन्दौर २२. श्रीमती उषा गुप्ता, मेरठ २३. डॉ. भरत राठी, मेरठ २४. श्री ओमप्रकाश अजमेरा, अजमेर २५. श्री रामरतन विजयवर्गीय व श्री अन्तरिक्ष विजयवर्गीय, अजमेर २६. श्री भवानीसिंह, अजमेर २७. श्री किशोर सिंह, अजमेर २८. डॉ. ए.के. गुप्ता, अजमेर २९. श्रीमती प्रमिला मित्तल, अजमेर ३०. श्रीमती सौम्या तोषनीवाल, अजमेर ३१. श्री रणजीत, अजमेर ३२. श्रीमती सुनीता वैष्णव, अजमेर ३३. श्रीमती सावित्री देवी रोहतक ३४. श्री महेश शर्मा, अजमेर ३५. श्री जेनिथ, अहमदाबाद ३६. श्रीमती कोमल आर्या व श्री नरपत, जोधपुर ३७. श्रीमती कमला देवी राणा, जम्मू व कश्मीर ३८. गौसेवा ट्रस्ट, छीपा बड़ौद, बारां ३९. श्री एस.के. कोहली, दिल्ली ४०. श्री नरेश कुमार, करनाल ४१. श्रीमती अरुणा बागोत्रा, जम्मू व कश्मीर ४२. श्री ओमपाल सिंह, रुड़की ४३. श्री मोहन लाल आर्य, सहारनपुर ४४. श्री सुस्नेह कुमार, हरिद्वार ४५. श्री एस.एस. गोयल, लुधियाना ४६. श्री मनसुख भाई मोहन भाई रावड़िया, कच्छ ४७. श्रीमती हंसाबेन मनसुख भाई, कच्छ ४८. श्री नन्द किशोर राठी, अजमेर ४९. श्री मुन्ना लाल भूतड़ा, भिवाड़ी।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

तत्त्ववेत्ता महात्मा नारायण स्वामीजी!

–डॉ. वेदप्रकाश 'विद्यार्थी'

श्रीमन्महर्षि दयानन्द के देहावसान के पश्चात् जिन मनस्वी नेताओं ने आर्यसमाज और वैदिक धर्म की दिव्य ज्योति को न केवल सँभाला, प्रत्युत् उसे और प्रखर बनाने में अपना योगदान किया। उन शीर्षनामों में एक नाम पूज्य महात्मा नारायण स्वामी महाराज का भी है।

स्वामी जी का जन्म तत्कालीन संयुक्त प्रान्त के अलीगढ़ जिले में हुआ, तत्पश्चात् उनकी कार्यस्थली मुरादाबाद रही। लेकिन समाज-सेवा एवं ऋषि-मिशन के लिए वह यथासंभव देश के प्राय: अधिकांश प्रदेशों में जाते रहे।

बचपन में उन्हें अरबी मकतब (पाठशाला) में प्रवेश दिलाकर फारसी की शिक्षा दी गई, परन्तु अपने विद्या-व्यसन एवं अध्यवसाय के बल पर उन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत तथा उर्दू में भी इतनी महारत प्राप्त की कि उच्च कोटि की साहित्य-साधना कर सके। इन सभी भाषाओं के प्रख्यात रचनाकारों को उन्होंने निष्ठापूर्वक पढ़ा एवं उनके साहित्य को यथास्थान अपनी रचनाओं में उद्धृत किया।

वे उन स्वनामधन्य महानुभावों में से थे, जिन्होंने महर्षि दयानन्द के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त किया। बचपन में विद्यालय में चर्चा सुनी कि एक बड़े सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती शहर में आने वाले हैं। उत्सुकतावश अनेक विद्यार्थी और अध्यापक स्वामीजी के गुजरने के मार्ग में जाकर खड़े हो गए। स्पष्ट था कि महर्षि के दिव्य और चमकते हुए चेहरे को देखने से सभी प्रभावित हुए। परन्तु अपने उस संस्कृत अध्यापक की दुष्प्रेरणा के कारण बालक (नारायण स्वामी) महर्षि की वाणी सुनने से वंचित रह गया, जिसने कह दिया था कि स्वामीजी अधर्म की बातें सुनाया करते हैं, उनके सुनने से पाप लगेगा।

मुरादाबाद आर्यसमाज के सभासद म. हरसहाय सिंह की सत्प्रेरणा से स्वामी जी आर्यसमाज की ओर आकृष्ट हुए। उस समय वे सरकारी सेवा में थे और मुरादाबाद के कलैक्टर के कार्यालय में लिपिक के पद पर कार्य करते थे, परन्तु वे यूँ ही आर्यसमाज के सभासद नहीं बन गए। सभासद् बनने से पूर्व उन्होंने एक वर्ष तक तपश्चर्यापूर्वक कुछ विशिष्ट व्रतों एवं प्रतिज्ञाओं का पालन किया। नियमों के पालन की कसौटी पर खरा उतरने के पश्चात् ही वे आर्य सभासद बने।

आर्यसमाज के सभासद बनने के पश्चात् वे अहर्निश ऋषि-मिशन के प्रचार-प्रसार में जुट गए। एक ओर आत्मिक उन्नति के लिए तपस्यारत हुए, तो दूसरी ओर सामाजिक उन्नति के लिए घोर परिश्रम किया।

संयुक्त प्रान्त (उ.प्र.) की आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री, सार्वदेशिक आ.प्र. सभा के मन्त्री एवं प्रधान, गुरुकुल वृन्दावन के मुख्याधिष्ठाता एवं आचार्य, हैदराबाद के निज़ाम की हिन्दू-धर्म-द्वेष नीति के विरुद्ध आर्यों के सफल हैदराबाद सत्याग्रह के प्रथम सर्वाधिकारी, महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी सभा, मथुरा के प्रधान, १९४७ में तत्कालीन सिन्ध प्रान्त की सरकार द्वारा सत्यार्थप्रकाश पर लगाए गए प्रतिबन्ध के विरुद्ध आर्यों के सत्याग्रह का नेतृत्व करना इत्यादि स्वामी जी महाराज के स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य ऐसे कार्य हैं, जो उन्हें चिरस्मरणीय बनाते हैं।

आर्यसमाज तब अपने शैशवकाल में था, अत: उसका सांगठनिक ढाँचा सुदृढ़ एवं स्पष्ट नहीं था। विभिन्न सभाओं का सुविधानुसार निर्माण एवं गठन किया जा रहा था। उपदेशकों एवं भजनोपदशकों को तैयार किया जा रहा था। गुरुकुलों एवं उपदेशक-विद्यालयों की स्थापना की जा रही थी और यह सब हो रहा था सरकारी, सामाजिक और धार्मिक प्रतिरोधों के प्रहार सहकर भी। नारायण स्वामी जी महाराज ने सरकारी नौकरी करते हुए भी इन सबमें बढ़-चढ़कर भाग लिया, अपने स्वास्थ्य की भी लेशमात्र चिन्ता नहीं की। तत्कालीन सभी महापुरुषों, यथा पंडित लेखराम, पंडित कृपाराम (स्वामी दर्शनानन्द), महात्मा मुंशीराम, महात्मा हंसराज, स्वामी स्वतन्त्रतानन्द महाराज इत्यादि से उनके अत्यन्त सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध रहे। स्वामी श्रद्धानन्द जी तो उनकी नेतृत्व क्षमता को बहुत मान देते थे तथा उन्हें अपना छोटा भाई ही मानते थे।

वह ऐषणात्रय से तो स्वभावत: दूर ही रहे, साथ ही

उन्होंने अर्थ-शुचिता तथा अपरिग्रह वृत्ति के अनेक उदाहरण स्वयं के जीवन में प्रस्तुत किए। उनकी योग-साधना, स्वाध्यायशीलता, ऋषिभक्ति, समाज-सेवा भावना, सरलता-सहजता, उद्यमशीलता, निर्वैरता, लेखन-सामर्थ्य, नेतृत्वशक्ति, व्यवस्था-कौशल्य इत्यादि ऐसे गुण हैं जो उन्हें ऋषि-मिशन के लिए समर्पित महानुभावों की प्रथम पंक्ति में विराजने के योग्य सिद्ध करते हैं। वे ऐसे यज्ञ-प्रिय थे कि "हवन करना आर्यसमाज में सम्मिलित होने से पहले शुरु किया था और उसे बराबर करते रहे। रेल के सफर में भी यज्ञ करना नहीं छूटा।" स्वामी सर्वदानन्द महाराज से १० मई १९२२ में संन्यास ग्रहण करने के उपरान्त ही सर्वतन्त्र स्वतन्त्र होने पर यह नियम छूटा। धन्य हैं ऐसे अनुकरणीय चरित्र वाले आर्यपुरुष।

जैसा कि पूर्व में निवेदन किया गया है कि स्वामी जी बहुभाषाविद् थे, उन भाषाओं में रचित साहित्य-सम्बन्धी उनका ज्ञान प्रशस्त था। उन्होंने इस ज्ञान का उपयोग आर्ष साहित्य के प्रणयन में किया। उनके द्वारा निर्मित साहित्य-भंडार न केवल विपुल, बल्कि मौलिक भी है। इसमें अनुवाद भाष्य, विवेचनात्मक ग्रन्थ इत्यादि सम्मिलित हैं। ग्यारह मान्य उपनिषदों के आर्ष भाष्य, कर्त्तव्यदर्पण, वेदरहस्य, मृत्यु और परलोक, प्राणायाम-विधि, आत्मदर्शन, कर्म रहस्य, नवीन और प्राचीन समाजवाद, आर्यसमाज क्या है, विद्यार्थी जीवन रहस्य, उपनिषत्कथामाला, पाप-पुण्य इत्यादि ऐसे ग्रन्थ हैं, जिनके अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इस प्रकार के ग्रन्थ-प्रणेता आर्यसमाज में पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जी ही कहे जा सकते हैं। स्वामी जी ने जिन अनेक ग्रन्थों की भूमिकाएँ लिखीं उनमें उपाध्याय जी का ग्रन्थ 'आस्तिकवाद' भी है। Crucification of Christ by an Eyewitness का अनुवाद भी उन्होंने आर्यभाषा में किया।

स्वामी जी महाराज ने संन्यास ग्रहण करने से पूर्व ही अपनी साधना-स्थली अल्मोड़ा के समीप तल्लारामगढ़ नामक स्थान पर निश्चित कर ली थी। उनकी कुटिया का नामकरण भी उनके भक्तों ने 'नारायण आश्रम' रख दिया था। यहाँ यह ध्यातव्य है कि उत्तराखण्ड के उसी क्षेत्र में आर्यसमाज के सत्प्रयत्नों से दलितोद्धार का कार्य किया गया, जिसके कारण वे दलित शिल्पकार स्वयं को आर्य कहने लगे तथा सरकारी कागजों में भी 'आर्य' ही लिखे जाने लगे, परन्तु उच्च वर्गों द्वारा कुछ मामलों में उनको सामाजिक अधिकार न दिए जाने पर उन्होंने आन्दोलन किया और स्वामी जी के प्रयत्नों के फलस्वरूप उन्हें अधिकार प्रदान किए गए। इसी तल्ला रामगढ़ में जो हाई स्कूल (अब इन्टर कॉलेज) खोला गया, उसका नाम 'नारायण स्वामी' हाई स्कूल रखा गया।

ऐसे मनीषी, तपस्वी, आर्यनेता, आदर्श संन्यासी, समाजसेवक और योगी व्यक्तित्व का देहावसान स्वतन्त्र भारत में १५ अक्टूबर १९४७ को बरेली में प्रख्यात आर्यसमाजी नेता और स्वामी जी के भक्त श्यामस्वरूप सत्यव्रत के निवास पर पेट के कैन्सर से हुआ। कैन्सर के कारण विभिन्न जेल-यात्राएँ वहां के भोजन की दूषितता, अहर्निश विषम परिस्थितियों में कार्य करते रहना इत्यादि रहे।

बरेली के जिस स्थान पर आचार्य विश्वश्रवा जी की देख-रेख में स्वामीजी का अन्त्येष्टि संस्कार किया गया वहाँ 'अन्त्येष्टि यज्ञशाला' के नाम से निर्मित यज्ञवेदी इस हेतु एक आदर्श वेदी है। बरेली की आर्य समाज तथा एक अन्य संस्था द्वारा सम्मिलित रूप से स्वामी जी की स्मृति में अक्टूबर मास में एक बृहत् कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है।

स्वामी जी के जीवन और तप-त्याग की अनेकों घटनाएँ हैं, जिन्हें इस छोटे-से लेख में देना संभव नहीं, परन्तु एक विशेष प्रेरणादायी घटना तो अवश्य पठनीय है ही जो उनकी आत्मकथा से संकलित है, उन्हीं के शब्दों में-

"**गुरुकुल सम्बन्धी फुटकर कार्य और नौकरी से त्याग-पत्रः**- १९१२ ई. के अन्त तक मुझे छुट्टी मिलती रही, परन्तु अब आगे छुट्टी नहीं मिलेगी, ऐसा मुरादाबाद के जिलाधीश ने निश्चय कर दिया। सभा के अधिकारियों ने कहा कि इस समय गुरुकुल का काम छोड़ने से अब तक का किया-कराया हुआ सब नष्ट हो जाएगा। जब मैं मुरादाबाद से प्रारम्भ में वृन्दावन आया था तो मेरे पास २०००रु. नकद थे। उन्हें मैंने मथुरा के एक कोऑपरेटिव बैंक में जमा कर

दिया था, जहाँ से लगभग १३ रु. मासिक का सूद मिल जाता था। मैंने निश्चय किया कि इसी १३ रु. मासिक में मैं अपनी गुजर करूँगा। इसमें से १० रु. मासिक भोजन मध्ये गुरुकुल भन्डार में दे दिये जाया करते थे, बाकी ३ रु. में वस्त्र, दूध और पुस्तक आदि का सभी व्यय पूरा करने का यत्न किया जाता था और पूरा हो ही जाता था। मैंने ख्याल किया कि शरीर की अयोग्यता प्रकट करके Invalid पेन्शन लेना रिश्वत लेने ही के सदृश है, जैसा ऊपर कहा जा चुका है। इसलिए यदि मैं नौकरी छोड़ दूँ तो फिर इसी १३ रु. मासिक में बाकी आयु भर निर्वाह करना पड़ेगा। इस विचार में ३ दिन बीत गए, अन्त में निश्चय किया गया कि नौकरी छोड़ देनी चाहिए। यद्यपि पेन्शन पाने में केवल डेढ़ वर्ष की कमी थी, परन्तु गुरुकुल के कार्य को इस डेढ़ वर्ष की पूर्ति के लिये छोड़ देना, यह अपने सहकारियों में से किसी को इष्ट नहीं था। इसलिये १९१२ ई. के अन्त ही में त्यागपत्र देकर सामाजिक कार्य करने के लिये पूरा अवकाश निकाल लिया गया।''

आशा है, हमारे पाठक स्वामी जी महाराज के प्रेरणास्पद जीवन-चरित से उपदेश ग्रहण कर जीवन को धन्य कर सकेंगे।

आह! ऊहावान् ऋषि-भक्त, विद्वान्, समाजसेवी श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य

- राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

आर्यसमाज के एक कर्मठ सेवक, ऊहावान् विद्वान् और पक्के-सच्चे ऋषिभक्त श्री सत्येन्द्रसिंह जी चल बसे। श्री पँ. राधेमोहन जी प्रयाग के पश्चात् यह आर्यसमाज के लिये दूसरी बड़ी क्षति है। यह मान्य धर्मवीर जी के पश्चात् परोपकारिणी सभा के लिये दूसरा बड़ा धक्का है। लेखक जब कुछ समय के लिये नरवाना रहता था, हम एक-दूसरे से परिचित थे। जब हम शोलापुर में थे तब उनका हमसे पत्र-व्यवहार और घनिष्टता होती गई। देहरादून रहते हुये आपने वहाँ के आर्य समाज की ठोस सेवा करते हुये बड़ा नाम कमाया।

आप कुछ समय के लिये अंग्रेजी के प्राध्यापक रहे, फिर भारतीय स्टेट बैंक के उच्च पदों पर आसीन रहे। आपका स्वाध्याय बड़ा गहन और व्यापक था। कभी अप्रामाणिक न तो बोलते थे और न ही अप्रामाणिक लिखते थे। अनाप-शनाप विषय लेकर न तो बोलते थे और न ही लिखते थे। वह सदैव वेद-मन्त्र को लेकर या ऋषि के वचन पर ही व्याख्यान दिया करते थे। उनके पुस्तकालय में बहुत दुर्लभ साहित्य तथा महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिकायें थीं। किसी भी पुराने प्रकाण्ड विद्वान् का ४०-५० वर्ष पुराना लेख उनसे माँगो, वह झट से अपने भण्डार से निकाल देते थे।

वह परोपकारी पत्र के प्रसार में सभा के एक मुख्य सहयोगी थे। आपने परोपकारी मासिक और फिर परोपकारी पाक्षिक के अनेक सदस्य बनाये। वह दान देने में बड़े उदार थे। सेवानिवृत्त होकर भी अपनी पेंशन से दान देते व दान दिलवाते रहते थे।

सेवानिवृत्त होने से कुछ पहले से ही लम्बे समय तक हमसे पत्र-व्यवहार जब न हो सका तो उनका पता निकालकर हमने उनको लिखा, ''माता-पिता से जो उत्तम शिक्षा पाई, गहन स्वाध्याय और आपके शुद्ध-चरित्र का समाज को व देश को क्या लाभ? यह जीवन ऋषि मिशन के अर्पण होना चाहिये।'' लौटती डाक में हमें लिखा कि जिस कार्य के योग्य मुझे समझें, मैं वही करूँगा। बस जो कहा सो कर दिखाया। वह देश भर में प्रचारार्थ भ्रमण करने लगे। ऋषि की भक्ति उन्हें अजमेर खींच लाई।

साठ वर्ष से कुछ कम समय तक हमारी अभिन्नता बनी रही। उनके श्वसुर भी आर्यसमाज के एक यशस्वी सेवक थे सो उनकी जीवन सङ्गिनी भी उनकी समाज सेवा में निरन्तर सहायक रहीं। आर्यसमाज को आपने बहुत कुछ दिया। आर्यसमाज के लिये आपने क्या नहीं किया? क्या-क्या लिखा जावे? आर्यसमाज के प्रति उनकी देन को सब आर्य भाई नहीं जानते। उनकी एक विशेष देन का हम

ऋषि भक्तों को स्मरण करवाते हैं। जब दिल्ली में कुछ मुसलमानों ने सत्यार्थ प्रकाश को प्रतिबन्धित करने के लिये कोर्ट में केस कर दिया तो आपने हमें प्रबल प्रेरणा दी कि मुसलमानों के कुछ अनिष्टकारी तत्त्वों का यह स्वभाव बन चुका है कि वे २०-२५ वर्ष के पश्चात् सत्यार्थ प्रकाश के विरुद्ध कोई षड्यन्त्र रच देते हैं। आप अकाट्य प्रमाणों व तर्कों से एक खोजपूर्ण पुस्तक लिख दें। आपके पश्चात् फिर न जाने कब कोई अमर स्वामी या शान्तिप्रकाश जी की कोटि का पूज्य विद्वान् जन्म लेवे। उन्हीं की प्रेरणा से हमने 'कुरान-सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में' लिख दिया जो अब समाप्त है। फिर अब आज्ञा दी कि बाईबल पर भी एक ऐसी ही पुस्तक रच दें। मान्य श्री ओमुमुनि जी ने भी उनके स्वर में स्वर मिला दिया।

पूज्य पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक ने हमें लक्ष्मण जी के बृहत् ग्रन्थ ऋषि जीवन का उर्दू से हिन्दी अनुवाद करने की आज्ञा दी। हमने यह कार्य आरम्भ कर दिया, परन्तु पंजाब में आतंकवाद, रक्तपात के कारण इसे छोड़ दिया। पूज्य मीमांसक जी तो चल बसे। श्री सत्येन्द्र जी ने हमें एक मार्मिक पत्र लिखा, ''या तो हमें यह बता दो कि आपके पश्चात् अमुक व्यक्ति यह कार्य कर सकेगा, नहीं तो इसे हाथ में लेकर पूरा कर दो। आप किसी पुस्तक अथवा प्रमाण जो आपके पास न हो की खोज में कहीं यात्रा पर नहीं निकलेंगे। यह कार्य हम लोग करेंगे।'' उनका पत्र पाकर लेखक ने ऋषि-जीवन सम्बन्धी अनेक छोटी-बड़ी पुस्तकें, सहस्रों पत्र-पत्रिकायें, विज्ञापन, रिपोर्टें निकालकर लेखनी उठा ली। 'महर्षि दयानन्द सरस्वती: सम्पूर्ण जीवन-चरित्र' आज तक का सबसे बड़ा ऋषि-जीवन पूज्य मीमांसक जी और सत्येन्द्रसिंह जी का अमर स्मारक है। यह उनकी अनूठी देन है।

जब गुजरात में सरदार पटेल जी की विशालकाय प्रतिमा लगाने की घोषणा की गई तो हमने सरदार जी के अन्तिम व्याख्यान (ऋषि दयानन्द को श्रद्धाञ्जलि) को एक शिला पर लिखवाने की बात चलाई। वह भाषण सभा ने छपवाया तो सत्येन्द्र जी ने झट से सरदार पटेल जी का नेहरु को लिखा वह पत्र भी छपवा दिया, जिसमें चीन की तिब्बत पर चढ़ाई को भारत के लिये घातक मानकर सरदार ने चिन्ता जताई है।

गुणों की खान, ऊहावान् विद्वान् सत्येन्द्र जी की मृत्यु से उत्पन्न रिक्तता को कौन भरेगा? भविष्य आँखें फाड़-फाड़ कर उस दीवाने की खोज में है।

परिचय- श्री मथुराप्रसाद नवाल

श्री मथुराप्रसाद नवाल जी का परोपकारिणी सभा से लगभग ३०-४० वर्षों का सम्पर्क रहा। परोपकारिणी सभा व ऋषि उद्यान के भवनों की भव्यता के वे साक्षी व सहयोगी रहे। ऋषि उद्यान के 'ओमानन्द भवन' की नींव भी उन्हीं के हाथों रखवाई गई। आर्यसमाज आपके जीवन और परिवार दोनों में ही रचा-बसा था-इसी कारण उनके चार सुपुत्रों में से एक श्री सुभाष नवाल जी परोपकारिणी सभा के कोषाध्यक्ष के पद पर रहकर कई वर्षों से सभा को समर्पित होकर कार्य कर रहे हैं।

३० अप्रैल १९३० को ग्राम जोगराज, जिला भीलवाड़ा में जन्मे श्री मथुराप्रसाद नवाल जी ने आजीवन आर्यसमाज को सहयोग करते हुए १७ मार्च २०१७ को अन्तिम श्वास ली। उन्होंने अपने जीवन काल में ही ये इच्छा रखी कि उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया जाये। उनकी इच्छानुसार ही दिनांक १८ मार्च को उनका संस्कार पूर्ण वैदिक पद्धति से किया गया। परोपकारिणी सभा अपने अनन्य सहयोगी के लिये शोक प्रकट करते हुए हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करती है।

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

आर्य जाति के गौरव आचार्य धर्मवीर जी

अद्भुत विलक्षण प्रतिभा के धनी, आर्य जाति के गौरव आचार्य धर्मवीर जी के साथ बिताए वे दिन वे पल सदा याद रहते हैं। उन क्षणों को अब तक जीने का प्रयास करता हूँ। कैसा सरल व्यक्तित्व था, कैसा हंसमुख, कभी-कभी उनका विनोद इतना प्रयोग होता था कि भारी मन अनायास ही हल्का हो जाता था। विद्वान् को सरल होना अभीष्ट है और इसकी पराकाष्ठा थे आचार्य धर्मवीर जी। मैं जब सोनीपत में उनके साथ था पूज्या माता ज्योतस्ना जी भी हमारे साथ थीं और माननीय विद्वान् डॉ. वेदपाल जी भी साथ थे। तब विनोद में आचार्य जी कहने लगे कि मुझे समझ नही आता कि दयानन्द को क्या सूझा? जिस विद्वानों की नगरी काशी से दृष्टि मिलाने का साहस करना भी बड़े-बड़ों को असम्भव था, वो ऋषि दयानन्द उससे भिड़ गया। सदियों के पाखण्ड से लबरेज धरा को धोने के लिए खड़ा हो गया! मुझे तो रोमाञ्च होता है। तब हम सब भावुक हुए बिना नहीं रहे।

एक दिन उन्होंने व्यंग्य विनोद में एक अजब बात कही, वे बड़े ही सहज भाव से कहने लगे कि ''दयानन्द ने कोई बहुत बड़ा काम नहीं किया'' बस इतना किया कि हिन्दू जाति अपने पाखण्ड के, वेद-विरुद्ध आचरण के चलते मिट गई होती बस उसे सौ-डेढ़ सौ साल आगे बढ़ा दिया। तब नहीं मिटी तो अब मिट जाएगी। मुझे अचानक से तो बड़ा बुरा लगा कि आचार्य जी क्या बोल गए लेकिन जब उनके वक्तव्य के मंतव्य को समझा और आगे उनके स्पष्टीकरण से स्पष्ट हुआ कि हिन्दू जाति में फैला हुआ पाखण्ड जिसे महर्षि दयानन्द ने प्राणपण से मिटाना चाहा वह पाखण्ड आज भी जस का तस है। इस हिन्दू जाति पर कुछ भी तो प्रभाव नहीं हुआ। जो कुरीतियाँ पहले थीं वे कुरीतियाँ आज भी हैं। छुआछूत, जातिवाद, जन्मना वर्णवाद, फलित ज्योतिष, गुरुडम, नाना प्रकार की बुराइयों में आज भी यह मानव समाज, हिन्दू समाज जकड़ा हुआ है और इसी की ओर उनका इशारा भी था।

मुझे भोजन की एक घटना याद आती है डॉ. वेदपाल जी, माता ज्योत्स्ना जी और मैं साथ में भोजन कर रहे थे, उनको भोजन के साथ हरी मिर्च बहुत प्रिय थी और यदि सलाद में हरी मिर्च आती थी तो वे न लें यह हो नहीं सकता था। पर मुझे आज भी उनकी वह शिक्षा भुलाए नहीं भूलती जब एक बार मैं संडीला में उनके साथ था। एक घर में हम भोजन के लिए गए तब मुझे अचानक नींबू की इच्छा हुई और मैंने नींबू की माँग गृहस्वामी से कर दी इस पर उन्होंने मुझे धीरे से कहा कि ''यजमान के घर में अभाव का चिन्तन नहीं करते।'' मैं शान्त हो गया। बाद में उन्होंने कहा कि रूप जी मैंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि यजमान अपनी सब सामर्थ्य से अतिथि को भोजन कराता है, और तब भी अतिथि किसी वस्तु की माँग करता है तो उसे अच्छा नहीं लगता, और तब तो वह बड़ा शर्मिन्दा होता है जब वह वस्तु उसके घर में न हो। मैं उनकी इस शिक्षा को कभी नहीं भूलता।

मेरा कोटिश: नमन उस महान् विभूति को।।

- आचार्य संजीव 'रूप', गुधनी, बदायूँ (उ.प्र.)

जो विद्वान् लोग परोपकार बुद्धि से विद्या का विस्तार करने, सुगन्धि, पुष्टि, मधुरता रोगनाशक गुणयुक्त पदार्थों का यथायोग्य मेल अग्नि के बीच में उनका होम कर शुद्ध वायु वर्षा का जल वा ओषधियों का सेवन करके शरीर को आरोग्य करते हैं वे इस संसार में अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होते हैं। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५८**

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य, उत्तम शिक्षा, विद्या, शरीर और आत्मा का बल, आरोग्य, पुरुषार्थ, ऐश्वर्य, सज्जनों का संग, आलस्य का त्याग, यम-नियम और उत्तम सहाय के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१**

आर्यजगत् के समाचार

१. प्रवेश प्रारम्भः- युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की दीक्षास्थली गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के उपरान्त ही विद्यार्थी को कक्षा ६ एवं ७ में योग्यता अनुसार प्रवेश दिया जा सकता है अथवा जिस विद्यार्थी को अन्य विषयों के साथ-साथ अष्टाध्यायी (न्यूनतम ४ अध्याय) कण्ठस्थ होगी, वह विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा के उत्तीर्ण होने पर कक्षा ८ में भी प्रवेश पा सकता है। गुरुकुल में प्राच्य व्याकरण के साथ-साथ अन्य सभी विषयों का गहनता से अध्ययन कराया जाता है, **सम्पर्क- आचार्य हरिप्रकाश, ०९४५७३३३४२५, ९८३७६४३४५८**

२. प्रवेश आरम्भ- वैदिक कन्या गुरुकुल, दयानन्द नगर, टि. मांदापुर, पो. एस. कोंडापुर, वाया राजपल्ली, मं. चिन्न शंकरंपेट, जि. मेदक, तेलंगाणा में कन्याओं को सांगोपांग वेदों को पढाते हैं, उस क्रम से सातवीं कक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई कन्याओं को गुरुकुल में प्रवेश लिया जायेगा। प्रवेश मई १ से जून ३० तक होगा। **सम्पर्क- ०९४४०१५३९६०**

३. शिविर सम्पन्न- वैदिक वीरांगना दल द्वारा राष्ट्रीय कार्यालय मालवीय नगर, जयपुर में पाँच दिवसीय नि:शुल्क शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में वैदिक ज्ञान श्रीमती दुर्गा शर्मा के द्वारा दिया गया। पाँच दिन चले इस शिविर में प्रत्येक दिन यज्ञ, वैदिक मन्त्रों व गायत्री पाठ होता था। इसके अतिरिक्त वैदिक वीरांगना दल द्वारा मध्यप्रदेश व गुजरात के कई शहरों में भी वैदिक धर्म के कार्यक्रम किए गए। इस प्रचार कार्यक्रम में दल की राष्ट्रीय अध्यक्ष अनामिका शर्मा ने मध्यप्रदेश के उज्जैन व इन्दौर शहर से प्रारम्भ करके गुजरात के अहमदाबाद में विभिन्न संगठनों से वैदिक विषयों पर चर्चा की। राजकोट में श्रीमती दुर्गा शर्मा ने सम्बोधित किया तथा दल में नवीन सदस्याओं को संगठित होने की प्रेरणा दी।

४. आवश्यकता- माध्यमिक व उच्च माध्यमिक छात्रों को योगासन प्रशिक्षण हेतु एवं वैदिक सिद्धान्तों पर लेख तथा ट्रैक्ट लिखने में रुचि रखने वाले अविवाहित युवा स्नातक की आवश्यकता है। दोनों विद्याओं में पारंगत अथवा इच्छुक युवा को समृद्ध ग्रन्थालय, निवास तथा उचित वेतन की व्यवस्था की जायेगी। गुरुकुलीय स्नातक, ब्रह्मचारी को प्राधान्य। **सम्पर्क- ०९९२२२५५५९७**

५. सम्मान- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित १५वें आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह के अवसर पर १२ मार्च २०१७ को 'ब्रह्मचारी राजसिंह स्मृति सम्मान-२०१७' से आचार्य भद्रकाम वर्णी जी को सम्मानित किया गया है, यह सम्मान दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की शिरोमणि संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से, आचार्य भद्रकाम वर्णी द्वारा आर्यसमाज, गुरुकुल आश्रम, वेद विचार पत्रिका, वैदिक सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर आदि के माध्यम से आर्यसमाज, वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार करने हेतु तथा समाज सेवा व राष्ट्र सेवा हेतु किया गया है, इनके सम्मान में एक प्रशस्ति पत्र तथा ५१०००/- का चैक प्रदान किया गया है।

६. वैदिक सत्संग सम्पन्न- आर्यसमाज रायपुरा, ज़िला श्योपुर, म.प्र. द्वारा दि. १४ से १६ मार्च २०१७ तक वैदिक सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन किया गया, जिसमें आचार्य वीरेन्द्र वेदोपदेशक, सहारनपुर, उ.प्र. सुश्री अंजलि आर्या भजनोपदेशिका, करनाल, हरि. से पधारीं।

७. सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न- दि. १८ से २२ मार्च २०१७ तक डॉ. श्यामलाल आर्य के यजमानत्व व डॉ. आचार्य ओमव्रत के ब्रह्मत्व में वेदपाठी ब्र. त्रिवेन्द्र व ब्र. राजन गुरुकुल पूठ, मेरठ द्वारा ग्राम कैमा-कुण्डा प्रतापगढ़, उ.प्र. में सम्पन्न हुआ। प्रात: व सायं यज्ञ के साथ ईश्वर, वेद, यज्ञ आदि विषयों पर व्याख्यान हुए तथा प्रतापसिंह वैदिक व सुखदेव आर्य द्वारा भजन एवं उपदेश दिये गए।

८. नवसस्येष्टि पर्व आयोजन-१२ मार्च २०१७ को आर्यसमाज बीकानेर, गंगायचा अहीर, जि. रेवाड़ी के तत्वावधान में वैदिक विधि-विधान से नवसस्येष्टि अग्निहोत्र का आयोजन किया गया। विगत ५० वर्षों से आर्यसमाज इस कार्यक्रम का आयोजन करती आ रही है। लगभग १५ किलो घी की आहुतियाँ देकर यजमान श्री अशोक आर्य ने यज्ञ को पूर्ण कराया। पूर्णाहुति के बाद श्री रामकिशन आर्य शास्त्री ने नवसस्येष्टि पर्व एवं यज्ञ के महत्व की जानकारी दी।

९. वेद व्याख्यानमाला व पुस्तक का विमोचन- आर्यसमाज किशनपोल बाजार, जयपुर, राज. में स्वामी सेवानन्द सरस्वती की जयन्ती पर सेवानन्द सरस्वती वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार न्यास, जयपुर की ओर से 'सत्यार्थदूत' सरोज आर्या द्वारा लिखित पुस्तक 'श्राद्ध एवं तर्पण का वैदिक स्वरूप' का विमोचन किया गया। महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों एवं सन्देशों को प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से पुस्तक नि:शुल्क वितरित की जाती है। इस पुस्तक के प्रकाशन का सम्पूर्ण व्ययभार उद्योगपति श्री चन्द्रप्रकाश देवड़ा एवं श्रीमती अरुणा देवड़ा द्वारा किया गया। विशिष्ट अतिथि लोकायुक्त श्री एस.एस. कोठारी ने

अपने उद्‌बोधन में कहा कि पुस्तक समाज में प्रचलित श्राद्ध-तर्पण जैसे कर्मकाण्डों के वैदिक स्वरूप को परिभाषित करने वाली है।

१०. स्थापना दिवस मनाया- केसरगंज स्थित आर्यसमाज अजमेर के तत्वावधान में आयोजित १४३वें आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर अध्यक्षीय उद्‌बोधन में प्रधान प्रो. रासासिंह पूर्व सांसद ने कहा कि आर्यसमाज एक क्रान्तिकारी विचारधारा है। मुख्य वक्ता प्रो. चन्द्रकान्त शास्त्री ने कहा कि ऐतिहासिक दृष्टि से महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८७५ ई. आज ही के दिन आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्यसमाज की स्थापना का प्रमुख लक्ष्य वेद को धर्म के केन्द्र में रखना एवं धर्म को पाखण्ड की परिधि से दूर करना था। मुख्य अतिथि स्वामी सोमानन्द सरस्वती ने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेदों का सही अर्थ किया तथा संसार को मार्ग दिखाया। विशिष्ट अतिथि श्री नवीन मिश्र ने भारतीय सम्वत्सर की महत्ता पर प्रकाश डाला। इससे पूर्व आचार्य अमरसिंह शास्त्री के ब्रह्मत्व में बृहद् यज्ञ हुआ। ईश्वर भजन खुशवन्तसिंह आर्य, गीत ज्योति वैदिक, मांगीलाल गोयल, मनीषा शास्त्री, ललिता आर्य एवं श्वेता आर्या ने प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन मन्त्री चन्दराम आर्य ने किया।

११. प्रभात फेरी का आयोजन- २३ मार्च २०१७ को प्रतिवर्ष की भांति आर्यवीर दल बेडा के तत्वावधान में प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। श्री महावीरसिंह चौहान ने दीप प्रज्वलित कर फेरी को रवाना किया। श्री अमरसिंह ने बताया कि सरदार भगतसिंह का यज्ञोपवीत संस्कार आर्यसमाज लाहौर में हुआ था। प्रभात फेरी में शराफत शेख, पुनाराम, परबतसिंह, समीर खान, शैलेन्द्र, महेन्द्र, शांतिलाल, जितेन्द्र, सुरेश, गोविन्द, मोन्टु, किशन, मोहन, दिनेश, कनाराम आदि के अलावा कई आर्यवीरों ने भाग लिया।

वैवाहिक

१२. वर चाहिये- देहरादून निवासी आर्य परिवार, संस्कारित, आयु- २४ वर्ष, कद- ५ फुट ६ इंच., शिक्षा- बी.टेक., एमएनसी में सॉफ्टवेयर इन्जी. युवती हेतु आर्यसमाजी परिवार का समकक्ष संस्कारित युवक चाहिए। **सम्पर्क**- ०९४११३४०८९५, misrapradeep414@gmail.com

१३. वर चाहिये- आर्य परिवार, संस्कारित, जन्मतिथि- २८/११/१९८४ वर्ष, कद- ५ फुट, ४ इंच., शिक्षा- बी.कॉम., एमबीए फाइनेन्स, सी.बैंक मैनेजर युवती हेतु आर्यसमाजी परिवार का समकक्ष संस्कारित युवक चाहिए। **सम्पर्क**- ०९९५८३००३६७, ७४१७८३७४८४ ई-मेल- aryavirender962@gmail.com

चुनाव समाचार

१४. आर्यसमाज टोंक, राज. के चुनाव में **प्रधान**- श्री सुखलाल आर्य, **मन्त्री**- श्री महेन्द्र कुमार आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री केदार नारायण विजयवर्गीय को चुना गया।

१५. आर्यसमाज मोहदीनपुर, जि. रेवाड़ी, हरि. के चुनाव में **प्रधान**- श्री सुरेशपाल आर्य, **मन्त्री**- डॉ. दिनेश आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री शुक्रमपाल आर्य को चुना गया।

१६. आर्यसमाज नाथनगर, भागलपुर बिहार के चुनाव में **प्रधाना**- श्रीमती सारिका देवी, **मन्त्री**- श्री रामदेव प्रसाद साह, **कोषाध्यक्ष**- श्री गणेश गुप्ता को चुना गया।

१७. उप प्रतिनिधि सभा भीलवाड़ा, राज. के चुनाव में **प्रधान**- श्री कन्हैयालाल साहू-डोहरिया, **मन्त्री**- श्री राधेश्याम अग्रवाल-फूलियाकलाँ, **कोषाध्यक्ष**- श्री रामकृष्ण दाता-भीलवाड़ा को चुना गया।

१८. आर्यसमाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अम्बाला छावनी के चुनाव में **प्रधाना**- श्रीमती विजय गुप्ता, **मन्त्री**- श्री सुनील गुप्ता, **कोषाध्यक्ष**- श्री भूपेन्द्र खरबन्दा को चुना गया।

शोक समाचार

१९. आर्यसमाल लाडनूं के वर्तमान प्रधान श्री ओ३म् प्रकाश शर्मा के पिताजी **श्री गणपतराम शर्मा** (पूर्व प्रधान आर्यसमाज लाडनूं) का निधन ९६ वर्ष की आयु में १७ मार्च २०१७ को हो गया, जिनका अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीति से जिला उप प्रतिनिधि सभा नागौर के मन्त्री श्री यशमुनि द्वारा किया गया।

२०. आर्यजगत् का एक और प्रहरी चिरनिद्रा में लीन हो गया। स्वामी रामेश्वरानन्द जी के शिष्य, गुरुकुल घरोंडा के स्नातक **आचार्य सत्यानन्द जी नैष्ठिक** का जन्म करनाल के निकट एक गाँव में हुआ था। आचार्य जी बहुत कम आयु में ही गोरक्षा आन्दोलन में कूद पड़े थे। उन्हें जेल भी जाना पड़ा। उनके गुरु से उनकी प्रथम मुलाकात भी तिहाड़ जेल में ही हुयी थी। उस समय उनकी आयु लगभग १६-१७ वर्ष थी। ऐसे क्रान्तिकारी व्यक्ति ने आगे चलकर आर्यजगत् की अतुलनीय सेवा की। उन्होंने अपना स्वयं का 'सत्यधर्म प्रकाशन' आरम्भ किया तथा अनेक दुर्लभ ग्रन्थों को प्रकाशित किया। जिस कारण आर्यजगत् सदैव उनका ऋणी रहेगा। आचार्य जी का देहान्त २ अप्रैल, २०१७ को देहरादून के हिमालयन हॉस्पिटल में हो गया। उनकी स्मृति में ७ अप्रैल, २०१७ को गुरुकुल झज्जर में श्रद्धाञ्जलि सभा का आयोजन किया गया।

परोपकारी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

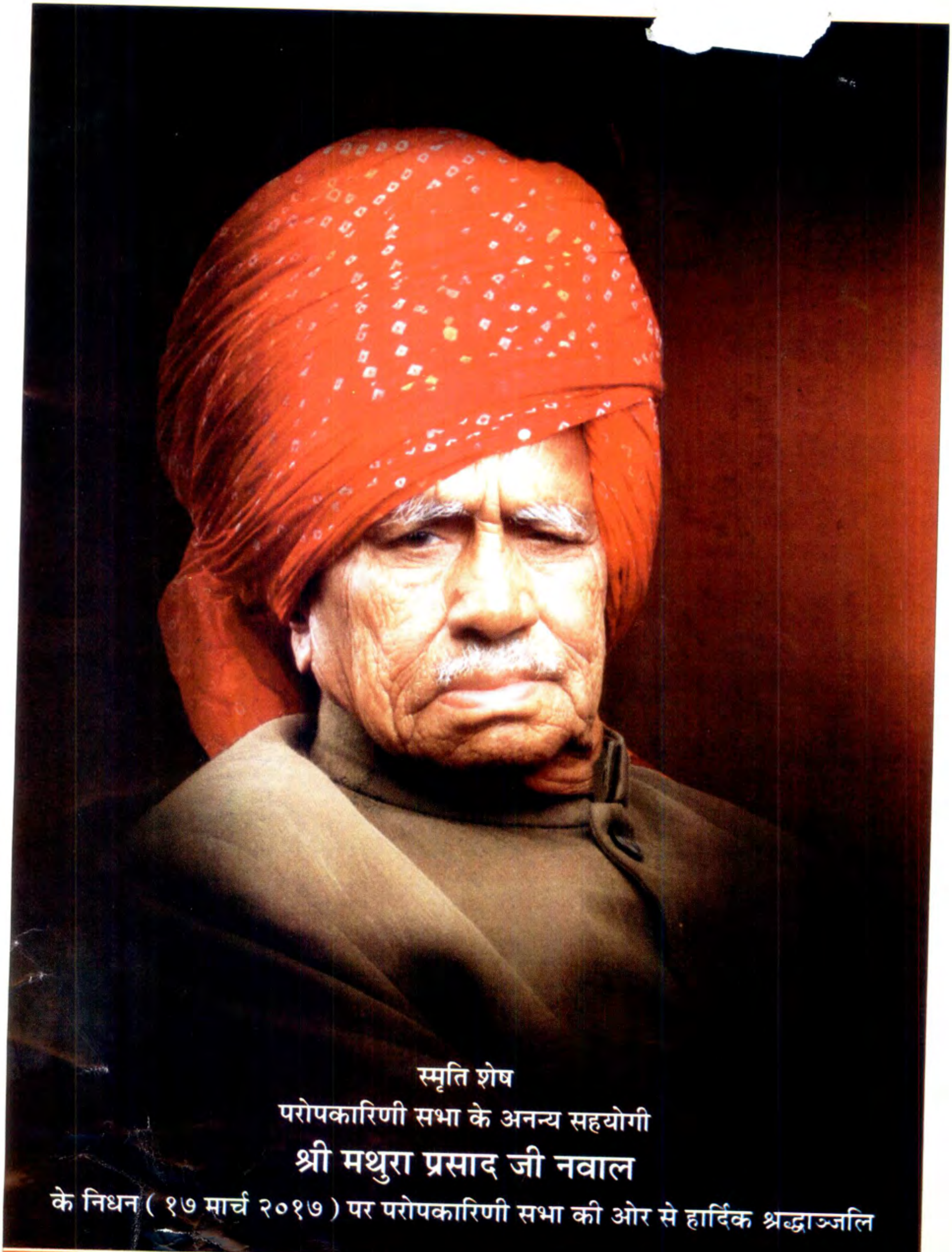

स्मृति शेष

परोपकारिणी सभा के अनन्य सहयोगी

श्री मथुरा प्रसाद जी नवाल

के निधन (१७ मार्च २०१७) पर परोपकारिणी सभा की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक   प्रेषण : १५ अप्रैल, २०१७   आर.एन.आई. ३९५९/५९

परिचय पृष्ठ संख्या ३८ पर

प्रेषकः
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज,
अजमेर (राजस्थान) ३०५००१

ा में,